[redacted]

श्रीसमयप्रबन्ध पदावली

श्रीमान् महात्मा विष्णुस्वामि के शिष्य
परम्परा मे श्री गोस्वामी बंशीधर
उपनाम बंशीअली जी के
मुख्य शिष्य

श्री अलबेली अलीजी

कृत

अष्टयाम सेवा के ३१७ भाव भरे अपूर्व पद

[redacted]

जगन्नाथ दास बी० ए० (रत्नाकर) द्वारा प्रकाशित
और अमीर सिंह द्वारा
मुद्रित।

काशी

हरिप्रकाश यंत्रालय
सन [illegible] ई०

प्रथम बार ५०० [मूल्य प्रति पुस्तक ।)

श्री १०८ परस्परचन्द्रचकोराभ्यान्नमः ।

श्रीसमयप्रवन्ध पदावली ।

राग रूहो ।

जय श्रीबंसीअली ललित अभिरामिनी । रूप सुसील सुभाइ प्रिया गुनगामिनी ॥ कुंजकेलि हित कहन सुललिता बपु धर्यो परम अलौकिक जुगल केलि रस बिसतर्यो * ॥ बिसतर्यो रस पुनि सरस अद्भुत प्रेम को अंबुधि बढ़्यो । वृन्दा बिपिन रस अति अगोचर रहस सब प्रगटहि कढ़्यो ॥ रहत सन्तत अंग संगी रसिकमनि कलकामिनी । जय श्रीबंसीअली ललित अभिरामिनी ॥ १ ॥

जय श्रीबंसीअली राधिका धन धनी । बिलसन सरस सुदेस प्रसंसित सवदनी ॥ आनँदनिधि सुखरास हासरस बरषिनी । सुन्दर बदन निहारि कुँवरि मन हरषिनी ॥ हरषिनी लखि बदन सुन्दर कुँवरि सँग कुंजन फिरैं । मनों रूप के कल हंस छौना धरनि पग डगिमगि धरैं ॥ उभय बैस किशोर नूतन अँगनि छबि जात न भनी । जय श्रीबंसीअली राधिका धन धनी ॥ २ ॥

जय श्रीबंसीअली निकुंजबिलासिनी । अलिकुल जननि प्रकास मधुर मृदुहासिनी ॥ दिये कंठ भुजमाल प्रिया संग रसिकिनी । करत केलि गर लाग दामिनी दमकिनी ॥ दमकिनी मनों कोटि दामिनि सघन घन बीथिन दिपैं दीरघ लतानि निवारि कामिनि भामिनी दोऊ छिपैं ॥ कबहुँ

---

* यह तुक अलबेलीअली जी का नहीं मालूम देता ॥

बेनी गुहन झिलिमिलि कोटि चन्द प्रकासिनी । जय श्रीबंसीअली निकुंज बिलासिनी ॥ ३ ॥

जय जय श्रीबंसीअलि आनंद रस भरी दुलरावत दिन रैन कुंवरि वर उर धरी ॥ नई नई रुचि जानि बिबिधि विधि पोषिनी । छिन छिन लाड़ लड़ाइ मनकुँ सन्तोषिनी ॥ तोषनी बहु भांति भामिनि सहचरी जन मन हिये । सुरत आसव प्याय प्यारी पीय कों चित चित दिये ॥ प्रेम सेज च-ढ़ाइ दंपति अतिहि लावैं रस झरी । जय जय श्रीबंसीअलि आनंद रस भरी ॥ ४ ॥

जय श्रीबंसीअली प्रेमरस रूपनी । बसत दुहुन हिय माझ सु सुषद सरूपनी ॥ अनुपम करत बिलास मिली संग ना टरैं रसमय वचन सुनाय उभय रसबस करैं ॥ करैं रसबस मिथुन मन अति केलि कल मनमथ बढ़ी । पुलक अंगनि उरसि उमगनि प्रेम दुति मानो चढ़ी ॥ मैन खेल खिलावें सजनी सरस रसिकनि भूपनी । जय श्रीबंसीअली प्रेमरस रूपनी ॥ ५ ॥

जय जय श्रीबंसीअलि जे अनुगत भये । भर्म भूलि जग द्वंद तिमिर हिय के गये ॥ प्रेम सुधारस सिंधु मगन मन मीन से । निर्भय निरअभिमान सबन सौं दीन से ॥ दीन से रहैं सन्तजन सौं रूप में मैना जके । फिरत झूमत प्रेम बि-ह्वल मनों मादिक मद छके ॥ बस वृन्दाबिपिनि सन्तत सुख सुमन भाये लये । जय जय श्रीबंसीअलि जे अनुगत भये ॥ ६

जय जय श्रीबंसीअलि जे गुन गाइहैं । श्रीवृन्दाबनबास कुंवरि पन पाइहैं ॥ अरु पावैं रस रीति जु मुनिजन ना

लहैं । नेति नेति करि बेदऽरु ब्रह्मादिक कहैं ॥ कहैं बेद जु नेति नेति सु बिपिन में जगमगरह्यो । सरन जो प्रद्युम्न बन्दिन तिनहिं सों सरबस लह्यो (१)॥ अलबेलिअलि कल केलि संपति सकल सहजैं पाइहैं । जय जय श्रीबंसीअलि जे गुन गाइहैं ॥ ७॥

जय जय श्रीबंसीअलि आदनँकंदना । रसिक चकोरन हेत सुप्रगट्यो चंदना ॥ बरषत आनँदसिंधु अतिहिं सुखदाइनो । हिये नैन मन पुंज कुमुद बिगसाइनो ॥ कुमुद बिगसत मोद दिन दिन किरन कृपा पसारहीं । द्वंद कलिमल मिटत तम सब जोन्ह हिय संचारहीं ॥ झलकैं सु बैनन माधुरी बिबि रसिकमनि बर राजहीं । जाके सुहृदय प्रकाश है यह कल-पतरु बड़ साजहीं ॥ ८॥

जय जय श्रीबंसीअलि मेरी स्वामिनी । प्रिय की जीवन प्रान सखी अभिरामिनी ॥ करत केलि रस झेली कुंजन कुंज मैं । निर्त्तत दोउ भुज माल मेलि गर मंजु मैं ॥ मंजु गर भुज मेलि सखि संग लाड़ली नव भाइ सों । करत हास उठाइ चिबुकनि करन मृदु अति चाइ सों ॥ उझक उझकैं कुंज खिरकिनि लाल सँग अति सोहनी । नीलपट मैं अंग झलकैं दामिनी मनो मोहनी ॥ ९॥

जय जय श्रीबंसीअलि मेरे प्रान हो । करत केलि भुज मेलि प्रिया सँग मुदित सो ॥ एक बैस इक रूप एकही प्रान हैं । दोऊ रस की खान परम सुखदान हैं ॥ परम सुख की दान सुन्दरि सब सखी मन भावनी । एक दूल्हो मुकटधर कर एक कर हैं दुलहनी ॥ भाइ भाइन गीत गावैं चाइ चा-

हुन निरत हैं। एक हँसि हँसि कंठ लागें एक अंकनि भरत हैं ॥ १० ॥

जय श्रीबंसीअली निकुंज बिलासिनी। गौर स्याम मन केलि कला परकासिनी ॥ नव नव सेज रचाइ कुसुम सौंधे भिये। पोषत मन के भाइ सदा दोउ रुचि लिये ॥ लिये रुचि अति सदा दंपति रचत केलि कराइ कैं। पोषैं सखियन सरस दिन दिन सुखद खेल मचाइ कैं ॥ छकन छकि जब बिबस रस बस मदन खेल खिलावहीं। लाइ अँग अँग अधर अधरनि ऐसे जतन जगावहीं ॥ ११ ॥

जय जय श्रीबंसीअलि आनँद रूपनी। दीनन सदा सहाई सुखद सरूपनी ॥ परम प्रेम गुन रूप अमित कबि को कहै। मीन दीन जल लीन सु क्यों अन्तहि लहै ॥ लहै अन्त न कोटि कलपन सारदा मूकू रहै। जीवन छापन की का चलै बिनु तव कृपा जो कछु कहै ॥ चरन रति जो देहु स्वामिनि जन्म को फल पाइयै। श्रीबंसिअलि अलबेलि जीवन सुजस तुम्हरो गाइयै ॥ १२ ॥ राग रामकली।

जय जय श्रीबंसीअलि स्वामिनि। सदा रहत प्रिय अँग सँग लागी रूप अनूपम कामिनि ॥ आनँदरूप सखी कुल मंडन लिये रहत रुख भामिनि। लड़बत छिन छिन अलबेली अलि ललिता बपु अभिरामिनि ॥ १३ ॥

श्रीबंसीअलि प्रान हमारे। हृदय कमल संपुट करि राखूं अँखियन के बर तारे ॥ चरन सरोज सुगति मति मेरी निरधन धन अनुसारे। अलबेली अलि मन मधुकर है पीवत रस सुख सारे ॥ १४ ॥

श्रीबंसीअलि के बलि जाऊं। जाकी चरन सरन किरपा तें बृन्दबन घन पाऊं॥ नवनागरि अलिकुल चूड़ामनि रचसि रचसि दुलराऊं। अलबेलीअलि हिय को गहिनो प्रेम जराइ जराऊं॥ १५॥

श्रीबंसीअलि की बलिहारी। जाके गरब भरे अति निर्भय रहत सदा बनचारी॥ राधा नाम नवल नामावलि सो निस दिन उर धारी। अलबेलीअलि एक भरोसे सोवत पैर पसारी॥ १६॥

बंसीअली नाम रंग भीनौ। प्रेम जराइ जरौ बहु बिधि सों सो भूषन उर कीनौ॥ जे जे रटत सुभग बड़भागी जन्मलाभ फल लीनौ। अलबेलीअलि अपनी करिकैं कुँवरि अपनपौ दीनौ॥ १७॥

जे श्रीबंसीअलि गुन गावैं। श्रीबृन्दावन अचल बसैं दिन श्रीराधा पन पावैं॥ नवल कुँवरि नव लाड़ गहेली नव नव भांति लड़ावैं। अलबेलीअलि रूप माधुरी पीवत और पिवावैं॥ १८॥

जबतें बंसीअलि पद पायें। श्रीबृन्दावन कुंजकेलि कल लूटत सुख मन भायें॥ रूपसुधा मादिक मद पीयें डोलत घूम घुमायें। अलबेलीअलि तबतें निज कर स्यामा जू अपनायें॥ १९॥

अथ आगम मंगल कौ।

भोरहिं उठि अलि रूप बिचारूं। अद्भुत नवल किशोर माधुरी रूप अनूप निहारूं॥ करि अस्नान उबट अँग अंगनि नाना भांति सिंगारूं। भूषन बसन प्रसादी स्वामिनि पुलकि

पुलकि उर धाऊं ॥ सदा रहैं ललितादिक संगी प्रेम भरी अनुराऊं अलबेली श्रीवंसीअलि बलि महल टहल अनुसाऊं ॥ २० ॥

भोरहिं अलि गुरु जाइ जगाऊं । चरन पलोटूं सेज सुदेस पैं रुख लै बचन सुनाऊं ॥ निकट लगी निसचल हो सजनी कुंजमहल बलि जाऊं । करि अस्नान बसन अलबेली भूषन अङ्ग बनाऊं ॥ २१ ॥

अथ सखियन को महल कौं चलिबो ।

गुंजन मधुपन सुनत अलींरी । उमगीं मनौं प्रेम की सरिता रूप के सिंधु चलींरी ॥ विहँसत बदन हँसत बिगसत सी मनो अनुराग कलींरी । रूप अनूप लखें अलबेली आई वारि भलींरी ॥ २२ ॥

कुंज पौर परि अलिकुल आईं । देखन चित नव रूप विमल ससि तृषित चकोरि लुभाईं ॥ अद्भुत दुति दीपति अँग अँग की रूपछटा छवि छाईं । पूर रहे दृग जल अलबेली निरखि निरखि बलि जाईं ॥ २३ ॥

अथ सखी प्रति सखी के वचन राग भैरो ।

राजत सुख सैन नैन मैन की खुमारी । प्रेम पुलक भलक अङ्ग क्रीड़त मिलि एक सङ्ग हँसि हँसि गर लागि लागि रूप की उज्यारी ॥ गलित कुसुम उरसि माल लसत अंक बिसद बाल मथित मदन मनसि लाल लाडिली दुलारी । अलबेली रसिक इन्द परसि उरसि नीबी बंद मेत मेत वदित मुदित भामिनि सुकुमारी ॥ २४ ॥

राजत नव कुंज आजु प्रीतम उर प्यारी । मन्द मन्द

हँसन जोति दामिनिदुति अति उदोति झलकत पिय अङ्ग माझ रूप की उज्यारी ॥ सिथिल कसन उर दुकूल मैन के हिंडोरे झूल करत स्याम अंक सैन मैन की खुमारी । अलबेली नवल बाल सर्वस धन रसिकलाल लिये रहत हिये माझ जीव की जिवारी ॥ २५ ॥

राग रामकली ।

राजत सेज सुदेस रँगीले । जगमगाति अतिसय दुति दीपति अङ्ग अङ्ग सुखसीले ॥ अरुझे हार बार मस्तक पर भूषन बन्धन ढीले । अति अरिसाति जँभाति अलबेली राते नैन दवीले ॥ २६ ॥

मरगजे सेज विराजत नीके । मरगजे अङ्ग रङ्ग रति राते माते नैन जु ती के ॥ मरगजे बसन लसैं अङ्ग अङ्ग मैं लागि रही उर पी के । छुटि छुटि फेर लगैं अलबेली पेच परे मनों ही के ॥ २७ ॥

जगावै जिन सोये उर लग री । प्रेम अनङ्ग रङ्ग सँग पिय के लाड़ लड़ी निस सगरी ॥ अबहीं पलक लगी नैनन की आरस मैं रहे पग री । श्रमकन मुख अम्बुज अलबेली झलक रहे मनो नग री ॥ २८ ॥

सारो सुक बोलत मृदु बानी । नव नव केलि कला रजनी के करत मधुर सुर गानी ॥ नैना घुले घुले आरस जुत भोर भई जब जानी । सुनि सुनि बचन रहस अलबेली अंचल लै मुसक्यानी ॥ २९ ॥

राग भैरो ।

चिरियन की चहोचहानि सुनत दोऊ जागे । प्रेम पुलक

अङ्ग अङ्ग पियें दोऊ सुरत रङ्ग मुखचुम्बी करत नैन सैननि अनुरागे ॥ बिगसे से बदन लसैं हँसैं मन्द मन्द कछू फूले कल कंज मंजु रूपसिंधु रागे। बारनि निरवारि लाल पोंछत मुख स्रम को बारि पीतंबर लीने अलबेली रस पागे ॥ ३० ॥

राग बिभास।

ललिता ललित प्रबीन बीन लै गावत मधुर मधुर सुर ठाढ़ी। पौढ़े सेज स्याम श्रीस्यामा सुनत तान कानन रुचि बाढ़ी ॥ अरुझि रहे अँग अङ्ग रसीले प्रेम की गांठ परी अति गाढ़ी। कौन परी ये बान अलबेली उठत नहीं रबिकर छन काढ़ी ॥ ३१ ॥

राग रामकली।

जागो बलि जाऊं भई पह्यो पौरी। उड़गन बिगत जोति ससि मण्डल रैन लगी सब नौरी ॥ नैन चकोर भये सखियन के तव मुख देखि सखोरी। मङ्गल सौंज लिये अलबेली कुंज की पौर खरीरी ॥ ३२ ॥

राग भैरो।

जागो मेरि प्रानप्यारि रजनी सब निघटी। उड़गन सब बिगत जोति दिनकर कर कुल उदोति मण्डल ससि मन्द होत बिबिधि जोति बिघटी ॥ सखियन के उर उरोज फूल फूल भये सरोज दरसन छिन दौरि पौरि आई सब इकटी। आरस बस अति जँभात प्रेम पुलक झलक गात बारत अलबेलि प्रान दै दै कर चिकटी ॥ ३३ ॥

चलि सखि चलि सखि कुँअरि जगाव। कुंजमहल सुख सेज लसैंती सुन्दरि मुख लखि नैन सिरावैं ॥ नीलम्बर गहि

बदन उघारैं वे मुरि मुरि अँग अङ्ग दुरावैं। गुदिगुदि इम गोरे अँग करिहैं वे हँसि हँसि मुख गारि सुनावैं ॥ बीन बजाइ रिझइ लड़ैती सुन्दर तान गाइ रुचि द्यावैं। यह सुख निरखि निरखि रस सागर अलबेली अलि बलि बलि जावैं ॥ ३४ ॥

जागिये लड़ैती निसि बीती सुख चैन सों। उड़गन कुल बिगत कांति उड़पति उड़ जोति जाति सुन्दर मुख चन्द क्यों न खोलो पट ऐन सों ॥ फूले सरि कञ्ज मंजु मधुप करत फिरत गुञ्ज पंछी बन चहचहात मधुर मधुर बैन सों। अलबेली अलि सङ्ग सार मृदुल बाहु अंस डार देखन बन सघन चारु चलिये गजगैन सों ॥ ३५ ॥

लीन्हें कर बीन ललित लाडिली जगावैं। प्रेम पुलक अङ्ग अङ्ग दरस सरस अति उमङ्ग मधुर मधुर तान लगीं कान सों सुनावैं ॥ झीने पट बदन जोति कोटि चन्द मन्द होत भूषन दति अति उदोति उड़गन चमकावैं। आरस रस भरे नयन छाई मनो मयन सयन रैन की उनींदि पलक झपकि झपकि जावैं ॥ बिथुरे मुख बार हार नख जुग उर वर सिंगार रजनी सुख चहन चारु अँखियन सचु द्यावैं। अलबेली अलि उरसि लाल लगी मनो रूप माल मन्द मन्द हास बदन बासि मैं दुरावैं ॥ ३६ ॥

जागौ सुकुँवारि कुञ्जद्वार अली खरियां। बागे बङ्ग विविध रङ्ग चुनै चरचि सौंधे सङ्ग भूषन मनि सुमन सरस ल्याईं डलि भरियां ॥ आवत कोउ लिये बीन गावत मग अति प्रवीन आनँद मन मोद भरीं डगमग पग धरियां। अ-

फून टप पटल टारि खोलौ मुख चन्द चाह अलबेली अलि दरस देहु आनँद की घरियां ॥ ३७ ॥

राग रामकली।

प्रातहि बतियन रस अनुरागे। पीयें रूप रसासव नयननि घूमत रति रस रागे॥ हँसि हँसि जात समात हिये मैं करत कलोल सुभागे। रैन घटी न घटी रुचि प्रीतम अलबेली रस पागे॥ ३८॥

नीकी भोर भई नहिं प्यारी। भूषन अङ्ग विराजत उडगन तव मुख रूप उँज्यारी॥ स्याम अङ्ग ये रैन रही छवि आरस जुत अँखियां री। अलबेली अलि नेकु रहौ बलि आईं नहिँ सखियां री॥ ३९॥

सैननि छाया खात बिहारी। मृदुल सुचिबुक प्रलोय प्रबोधत करत तियै मनुहारी॥ ऐसहिँ रहौ न लहौ पल अन्तर केलिकला रस सारी। लालच लखि पिय कौ अलबेली हँसत बसन मुख धारी॥ ४०॥

लाल को अँखियां रूप लुभानी। आठो जाम पिवत ही बीते तऊ तृपति नहिँ मानी॥ लखि लखि नयन चयन नहि पावैं चाहत हियें समानी। अलबेली अलि रूप तरङ्गनि पिय मन मीन रहानी॥ ४१॥

राग ललित।

लाल तेरी कौन परी यह बान। आवत घुरी नींद नयननि मैं लाग्यौ अँग अरिसान॥ पीवत ही रस सब निसि बीती आई होन बिहान। अलबेली अलि रस के रसिया निपटहि निठुर निदान॥ ४२॥

खला हूँ अनोखे ख्याल पर्यौ है। अतिहीं नींद्र नयन उनींदे आरस रंग भयौ है ॥ अति आसक्ति भयो नहिं जानत पुहुप प्रभाति कयौ है। अलबेली अलि लपति न मानत किहिं रस रङ्ग छयौ है ॥ ४३ ॥

लाल तेरे लोभी लोलुप नैन। किहिं रस छकनि छके री छबीले मानत नाहिंन चैन ॥ नींद्र नयन घुरी आवत अति थोरि रही कछु रैन। अलबेली अलि रस के रसिया कत बितरति ये बैन ॥ ४४ ॥

राग भैरव।

उठि बैठे दोउ सेज सुभागे। मद माते अरसाते दम्पति मरगजे अङ्गनि बागे ॥ रङ्ग अनँग अतिशय दुति दीपत प्रेम पुलकि अनुरागे। लागि रही पिय उर अलबेली लखैं सखी बड़ भागे ॥ ४५ ॥

फूले फल फूल मंजु मधुप करत मधुर गुञ्ज देखि सखी सघन कुञ्ज बैठे उठि भोर री। स्याम अंस सीस दियें आरस रस रङ्ग भियें नील कमल सेज मनों सोयौ ससि गोर री ॥ दोऊ भुज कसें लसैं अँग अँग प्रतिबिम्ब दिसें दियौ पीय हाथ तीय मृदुल वर कपोर री। वारनि निहवारि चारु लसैं सखी कुञ्ज द्वार ऊँघत अलबेलि एक गहैं डारि डोर री ॥ ४६ ॥

देखि सखि भोर उठि बैठि सुख सेज पर दियें सिरसंस भुज अंस पी के। समर दल जीति पट पीत ओढ़ें दोऊ झिलमिलित दलमले अङ्ग नीके ॥ झपि रहे नयन सुखदयन आरस बिबस दियौ पिय हाथ करपोल ती के। डारि निह-

वारि अलबेलि निरखै सखी एक रहि ऊँघ पट खुले ही के॥४७

भोर उठी आरस अरसानी। नवल नेह रस रैन बिहानो॥ कंचुकि दरकि रही बँध टूटे। सगबगे केस सुभग उर छूटे॥ पेंच डारि कर पल्लव माई। मुरि मुरि अँग अँग लेंत जँभाई॥ अरुन नयन खञ्जन मनु खेल। मैन सन डगमग पग पेल॥ हसन सलज्ज सु गाड़ कपोलन। सुन्दर मुख नथ लटकन डोलन॥ प्रेमोन्मत्त मगन मन गोरी। सुरति समर रस सिन्धु झकोरी॥ भुज जुग डारि कंठ पिय वाला। लटकि रही मनों रूप की माला॥ अलबेली अलि हिय हरषानी। वारि वारि कर पीवत पानी॥ ४८॥

बैठे सुख सेज दोऊ करत मधुर बतियां। लिये पीत बसन छोर पोंछत दृग रेख कोर गंडनि जुग पीक लीक सूचत सुख रतियां॥ टूटो उर मुक्त माल छूटे मुख सौंधे वाल लिये हाथ मुकर प्यारि लखि लखि मुसकनियां। अलबेली अष्टजाम बीते सुख रङ्गधाम तृपनि नहीं होति कहूँ अँग अँग पुलकनियां॥ ४९॥

राग रामकली।

आजु सखी राजत निसि जागे। अद्भुत प्रेम सुधा रस पीयें घूमत दृग अनुरागे॥ जगमग रह्यो जु गंड पीक रँग अङ्ग अनँग रस पागे। टूटी लरि मोती उर छूटी लूटी रहसि सुभागे॥ काजर रेख लसत अधरन पर उर वर नखक्षत दागे। अलबेली अलि झपक पलक बिव उर सों उर झकि लागे॥ ५०॥

रसमसे नयन उनींदे सोहैं। दै भुज अंस सेज उठि बैठे

प्रेम भरे मुख जोहैं ॥ निरखि चिन्ह तिय अँग रँगराते लाल रहत सकुचौहैं । अलबेली अलि लै कर दरपन पूछत पिय निज गौहैं ॥ ५१ ॥

दरपन लै मुख निरखत नीके । सुन्दर बदन हँसौहीं चितवनि सूचत सुख रजनी के ॥ पीक कपोल नवल रद छद युत कज्जल अधरन ती के । अलबेली लखि चिह्न सुहाये बढ़त ओज हिय पी के ॥ ५२ ॥

दरपन हाथ लिये पिय प्यारी । निरषत मुख सुख बिलसे झुलसे बढ़ी प्रीति चित चारी ॥ जगमग रहे चिह्न रजनी के हँसि हँसि रहत निहारी। अलबेली अलि कर प्रतिबिम्बहिं नयनन हीं मनुहारी ॥ ५३ ॥

राग बिभास।

भोरहीं उठि दरपन मुख देखें । हँसि हँसि दोऊ मिलाय कपोलनि उर आनन्द बिसेषें ॥ बेंदी भाल बनावत भामिनि पिय दृग अञ्जन रेखें। अलबेली अलि निरषि छकी छबि नयन न परत निमेष ॥ ५४ ॥

बैठे दोउ संकेत कुञ्ज मैं दरपन लै कर करत सिंगार । जगमग रहे चिह्न रजनी के हँसि हँसि रहत निहार ॥ रचत मांग प्यारी कैं प्यारो तिलक बनावत चार। बिथुरे केस सकेलत मेलत अञ्जन नयन सँवार ॥ अरुन नयन घूमत मतवारे पिये रसासवसार। अलबेली अलि सब निसि झुलसे बिलसे प्रेमबिचार ॥ ५५ ॥

दरपन मैं मुख देखि रहैं री । चितै चकित दृग रहत ठगे से निसि के चिह्न चहैं री॥ हँसि हँसि ललित कपोल

मिलावत अङ्गनि अङ्ग फहैं री। अलबेली रस बिलसन झु-
लसन जोवन एक यहैं री ॥ ५६ ॥

राग ललित।

निरषत मुख लै दरपन पान । पीक कपोल लोल दृग
राते किये रसासव पान ॥ बिथुरी अलक पलक अंजन चखि
चिह्नन निसा पहिंचान । अलबेली लखि रूप अनूपम भई
नई ललचान ॥ ५७ ॥

राग रामकली।

अलिजन चित उतकंठ भई । निरषैं रूप अनूप निकट
ह्वै बिलसैं सुख निसि रङ्गमई ॥ चिकहि उघारि निहारि
मुदित मन भीतर हँसि हँसि गई। अलबेली अलि अविचल
जोरी सहचरि हरषि असीस दई ॥ ५८ ॥

निरषि निरषि अलि रूप लुभानी । नाहिं तृपति पीवत
अति आतुर नयन निमेष भुलानी ॥ हँसि हँसि सिथिल दु-
कूल सँवारत हिलगि हिये सरसानी । अलबेली सु र-
सिक रसलोभी रस बतियन बतरानी ॥ ५९ ॥

राग बिभास।

ललिता करत कुँवरि सौं बतियां देख्यो एक सुपन र-
जनी कूँ। मनसिज भूप रूप सिंहासन बैठ्यौ सङ्ग लिये रति
ती कूँ ॥ बैस सुदेस मंत्र नव जोवन कर तषसील सु सुरति
अमी कूँ। यह सुभ सुपन सुनत अलबेली नइ लजिषान भई
फिरि ही कूँ ॥ ६० ॥

देख्यो आजु इक कुँवरि सुपन मैं। निरपति मदन नयन
सँग घाती मृगया खेलत रूप बिपन मैं ॥ करत प्रधावनि

जुग मृग लखि लखि छिपे बसन नव नीप सदन मैं । अष्ट जाम खेलत ही बीते तऊ तृपति नहिं चोत जु मन मैं ॥ बिलसे सुख रजनी के सजनी कहत प्रहासन सुपन बचन मैं । सुनत बात रति पति अलबेली ललिच ललिच मुसक्यात हगन मैं ॥ ६१ ॥

राग भैरव ।

मङ्गलभोग सखी लै आई । पिस्ता दाख चिरौंजी मोदक माखन मिश्री दूध मलाई ॥ जेंवत अरस परस रति राते माते अति निसि केलि गँवाई । झपकि परत पल नैन उनींदे बीचहि कौर लिये रहिजाई ॥ ललिता ललित भांवती बतियां कहि कहि हँसि हँसि रुचि उपजाई । कछु पायो दोऊ पिय प्यारी अँगराते अँग लेत जँभाई ॥ सीतल जल सुगन्ध अति हित सों रतन जटित झारी भरि ल्याई । ध्वायौ मुख अँगोछि अलबेली बीरी हँस मुख देत हँसाई ॥ ६२

मङ्गल आरति अलि सजि ल्याई । कञ्चन थारि नगन जुत झलकत दीपक घृत हित बाति बनाई ॥ फेरत अलि नव नेह नवेली जगमग जगमग जोति सुहाई । भूषन पट अँग अँग अलबेली रूप छटा सब भवनहिं छाई ॥ ६३ ॥

मङ्गल आरति करत सखीजन । मंगल फूली प्रेम मुदित मन ॥ मंगल कंचन थारि सँवारी । मंगल घृत हित दीपक बारी ॥ मंगल रूप छटा छवि छाजै । बैठी रूप सिंहासन राजै ॥ मंगल भूषन मंगलजोती सब दिसि जगमग जगमग होती ॥ मंगल रूप अनूप कुंवरिवर । मंगल पीव नैन चखक कर ॥ मंगल झालरि ताल मृदंग । सारंगि बीन मुरज मुरचंग ॥

मंगल रागिनि राग सुनावें । मंगल नूपुर सुरन मिलावैं ॥ मंगल हँसन पुहुप बरसावैं । मंगल जय जय शब्द सुनावैं ॥ अलबेलीअलि मंगल भीनी मंगल ललित आरती कीनी ६४

रागिनि राग प्रेम रंग भीने । आए अवसर जानि प्रवीने ॥ प्रथमहिं भैरव राग जमायो । नवल कुंवरि मनमोद बढ़ायो ॥ सारँगि बीन प्रवीनैं बजावें । ताल भेद गुन कला दिखावैं ॥ कबहूं हँसि हँसि मिल दोउ गावैं । आनन लगि बिब तान मिलावैं ॥ मोद बिनोद बढ़्यो अति भारी । भूषन वारत रीझ बिहारी ॥ मंगल रंग सबन पर छायो । अलबेलीअलि मंगल भायो ॥ ६५ ॥

रँग भरी राजत अलक लड़ी री । ललिता ललित लिये जल झारी ध्वावत सुन्दर बदन खड़ी री ॥ प्रेम पुलक दीपत अँग अंगनि पिय के नव नव लाड़ लड़ी री । अलबेलीअलि छकनि छकी छबि प्रीतम नयनन मांझ गड़ी री ॥ ६६ ॥

बैठे कुंजभवन दोउ प्यारे । अद्भुत रूप अनूप उँज्यारे ॥ छकन छके अँग अँग अति सोहैं । चंचल नैन मैन मन मोहैं ॥ आईं झूमि सखीं चहुं ओरैं । हँसि हँसि चितवत नैननि कोरैं ॥ मधुर मधुर सुर सौं इक गावै । इक सारंगी बीन बजावै ॥इक हँस सिथिल दुकूल बनावै । इक प्रहास के बचन सुनावै ॥ नैन सलज्ज हँसत नव बाला । प्रेम मुदित मनु रूप की माला ॥ अलबेलीअलि रूप निहारै । प्रमुदित हरषि अपनपौ वारै ॥ ६७ ॥

बड़े बड़े नयन अरुन रतनारे । छकनि छके रसमत्त उनींदे नींदर घूमघुमारे ॥ सुंदर इन्दवदन अंबुज पर दीपत

रूप उँजारे। अलबेली अलि फिरैं चपल मति चञ्चल मद मतवारे ॥ ६८ ॥

छकनि छके प्यारी तेरे नैन। अतिहिं अरुन रस रङ्ग उनींदे आरस बस मृदु बैन ॥ अधरनि रङ्ग कपोल विचित्रित नख जुग उर रस ऐन। कुंकुम जुत भूषित मालावलि रमी रहसि सुख सैन ॥ प्रेम पुलकि अतिशय दुति दीपति जीते सत रति मैन। अलबेली अलि क्यौं न दुरैं सौं चिह्नन निसा सुख चैन ॥ ६९ ॥

राग रामकली।

कत सकुचत दुरवत ये अँखियां सूचत रैन चैन की बात। झपि झपि परत पलक आरस बस बलित बोल तुतरातैं ॥ पीक लीक गण्डन जुग मण्डन रञ्जित उर नखपातैं। अलबेली अलि प्रेम पुलक तन झलकत अंग अँगरातैं ॥ ७०

बड़ि बड़ि अँखियनि नींद घरानी। अति अनुराग भरी सँग पिय के जागत रैन बिहानी ॥ रङ्ग भरी राती रसमाती अरुन डोर सरसानी। झपि झपि परत छबीली पलकैं आरस जुत अरसानी ॥ निरखि छकी छबि रूप रँगी अलि तन मन रहत लुभानी। अलबेली अलि चित्र रहीं सब नैन निमेष भुलानी ॥ ७१ ॥

राग भैरव।

नैना आजु कहा रँग राते। अङ्ग अनङ्ग रङ्ग रस भीने बोलत बचन रचन तुतराते ॥ पीक लीक गण्डन जुग मण्डन रदन छदन अधरन मुसिक्याते। अलबेली अलि चतुर भामिनी चोरत चित बितु मुख सकुचाते ॥ ७२ ॥

ललिता कहति कुँवरि हितकारिनि। चलिहौ बलि मिलि सङ्ग सहेली बन घन रूप अनूप निहारनि॥ विविध भांति अतिशय फल फूलनि फूल रह्यौ सब हेत तिहारनि। परम प्रवीन रसिक अलबेली उठी मुदित हित चित अनुसारनि॥ ७३॥

रैन की उनींदी प्यारी ठाढ़ी कुञ्ज अँगना। छूटे मुख बार हार उरसि नखन रेख चारु रञ्जित कुच कुंकुम मुक्तावली सरँगना॥ प्रेम पुलक झलक गात आरस जुत अति जँभात मींजत कर कञ्ज नैन राते रस रंगना। अलबेली उर दुकूल सिथिल कसन भुजन मूल रमी रहस सरस आजु प्रीतम के सँगना॥ ७४॥

राग देवगन्धार।

ए दोउ खरे कुञ्ज की पोर। बमिल भुजा बिब अंसन दीनें सुभग सेज उठि भोर॥ गदगद कंठ उभय मिलि गावत नवल कपोलन जोर। झपकि पलक रहिजात सिथिल गति गहि डारिन की छोर॥ परसि सरस कुंकुम मालावलि रञ्जित पीक कपोर। पट पलटे उलटे अँग भूषन गलित कुसुम कचडोर॥ अति अरसात जँभात रसमसे आरस अङ्ग न थोर। अलबेली अलि देति चुटुकि कर चितवति नैननि कोर॥ ७५॥

प्रात समय उठि सैन भौन ते खरे कुञ्ज के द्वार। अंसनि पर भुज दियें मुदित मन अङ्ग अङ्ग सुकुँवार॥ गलित कुसुम विगलित मालावलि मुख पर श्रमकन बार। अँग अँगरात समात हिये मैं हँसि हँसि रहत निहार॥ प्रेम पु-

लक अतिशय द्युति दीपति अरुन विलोचन चार । अल-
बेली अलि मत्त परस्पर पियें रसासव सार ॥ ७६ ॥

राग भैरव।

कुञ्जपौरि राजत रँगभीने । मदमाते अरसाते दम्पति
मृदुल भुजा बिबि अंसन दीने ॥ छूटे बार हार,उर टूटे
परसि सरसि चरनन रस लीने। उर उरजात जँभात अल-
बेलो मुदित प्रान न्योछावरि कीने ॥ ७७ ॥

रसमसि कुञ्जपौरि पर ठाढ़ी। परिरम्भि गांठ चारु भुज
गाढ़ी ॥ झपि झपि परत उनींदी पलकें । कछुँ कछुँ मुख
पर छुटि रहिं अलकैं॥ कञ्चुकि दरकि सरकि रहि उर तें।
प्रेम बिबस आरस रस भर तें ॥ अँग अँगरात जँभात रँ-
गीली। देत चुटुकि अलि रसिक रसीली॥ अलबेली अलि
रूप के गोभा। लटकि चले बन देखन सोभा ॥ ७८ ॥

अथ मङ्गल कौ बन बिहार ।

राग अलहिया बिलावल।

रैन बसेरैं कुञ्ज तैं आवैं रँगभीने। मरगजे बागे अङ्ग
मैं अंसन भुज दीने ॥ उर माला टूटी हियें छूटे केस न-
वीने। अलबेली आरस भरे सुख रञ्जन लीने॥ ७९ ॥

आवैं उठि सुख सेज तें बन कुञ्जन माहीं। धरत च-
रन अति डगमगे जोरें गलबाहीं ॥ द्रुम बेली फूलनि छईं
तिन तर झुकि जाहीं। चलन सघन बीथिन कहूँ अँग अङ्ग
समाहीं ॥ अति अरसात जँभात हैं उर उर लगि जाहीं ।
अलबेली अलि रँगभरे मृदु मुख मुसिकाहीं॥ ८० ॥

कुञ्जमहल सुख सेज तें आवैं अरसाने। डगमग पग

गजगति धरैं सुख मैं सरसाने ॥ छकन चखकि माछिक भरे दृग घूम घुमाने । अलबेली रँग जगमगे लखि नैन सिराने ॥ ८१ ॥

राग बिभास ।

रुनकि झुनकि आवति कुंजन तें ठटकि ठटकि पग धरति नवेली । झुकि झुकि चलत सघन नव बीथिन पिय निरुवारत कुसुमन बेली ॥ लटकि लटकि नव नीलम्बर वर जाति सँभारति सङ्ग सहेली । पीक कपोल लोल दृग राते रमि रहि नैननि छवि अलबेली ॥ ८२ ॥

आवति कुंजनि तें गरबहियां । मदमाते अरसाते दम्पति डगमग अवनि धरत हैं पैयां ॥ छोर रहे छुटि नील पीत पट जात सँभारत सखि दोउ घैयां । उर उर जात समात मुदित मन अलबेली अलि भुज गहि गहियां ॥ ८३

राग अलहिया बिलावल ।

पीयैं प्यालो प्रेम कौ डोलैं मदमाते । झूमि झूमि झुकि जात हैं नैना अरसाते ॥ अँग अँगरात जँभात हैं हँसि उर उरजाते । सांकरि कुंजनिमैं चलैं अँग अङ्ग समाते ॥ डारनि गहि ठठकत कहूँ गावैं मुसिक्याते । झपकि पलक रहिजात हैं कलकंठ सुहाते ॥ आनँद रस घन रूप के बरषत दिन राते । अलबेली अलिजन पियें चातक हम याते ॥ ८४ ॥

राग भैरव ।

देखत बन फिरत आजु लाडिली नवेली । अङ्गनि की कांति पांति भई बिपिन और भांति आतप की दोनि मनो

चहौं ओर फैली ॥ झूमती गयन्द चाल धरत चरन नवल बाल आगैं निरवारत पिय जात सघन बेली। अलबेली अलि सङ्ग साथ लिये ललित बीन हाथ गावत अति मधुर तान आनँद रस मेली ॥ ८५ ॥

प्यारी फुलवारि मांझ डोलत अति रगमगी। सारी जरतारि खेत मधुप गुंज गन्ध हेत कञ्चन सो रङ्ग अङ्ग अनुपम छवि जगमगी ॥ कन्चुकी सुरङ्ग अङ्ग सिथिल कसनि नीवि बन्ध कहूँ कहूँ खेद बदन छूटी लट सगबगी। आरस रस भरे नैन छई मनो मैन सैन सींचत छलबेलि अवनि धरत चरन डगमगी ॥ ८६ ॥

राग अलहिया बिलावल।

न्हानकुंज पग धारिये मेरी लाड़ गहेली। अङ्ग सुढँग आरस भरे बढ़ै आनँद बेली ॥ चलहिं नहौं नागर नवल अटके रस केली। बतियनि लगि सँग लै चली ललिता अलबेली ॥ ८७ ॥

राग बिभास।

न्हानकुंज लखि रसिक लुभाने। ठौर ठौर रचना रचि कीनी चित्र चतुर अलि बाने ॥ केतकि चम्प जुही अलि फूली मधुकर फिरत भुलाने। आन धरी चौकी अलबेली बैठे रूप दिवाने ॥ ८८ ॥

मंजन छिन ललितादिक आईं। भूषन अङ्ग उतारत हँसि हँसि प्रेम भरी झलसाईं ॥ बिबिध सुगन्ध मिलाइ उबटनो चित्रा अलि करि ल्याई। अलबेली अलि लड़ैं छिन छिन फलीअङ्ग न समाईं ॥ ८९ ॥

झीनो पट अन्तर करि सजनी उबटन अङ्ग लगावैं। व्याकुल होत ललन मनमोहन देखन कौं अकुलावैं॥ झिलमिलात अतिशय दुति अँग अँग तऊ चैन नहिं पावैं। लोलुप दृग पिय के अलबेली चहुँ दिस चपल फिरावैं॥ ९०॥

मंजन करत रसिक मिलि अलियां। गहि गहि पानि दुहों दिसि हँसि हँसि उबटन अङ्गनि मलियां॥ मुरि मुरि जात लजात सकुच अँग करत केलि कल रलियां। अलबेली अलि करत कलोलें मनु फूलीं प्रमोद की कलियां॥ ९१॥

राग भैरव।

स्नान करत प्यारी अलकलड़ी री। कञ्चन चौकी विसद मनोहर बैठी अनुपम रूप चढ़ी॥ भूषन बसन उतारत सजनी अँखियन नव नव चाह चढ़ी री। बिबिध कांति अतिशय दुति दीपत रूप रासि अँग अङ्ग बढ़ी री॥ भरि भरि सुंदर कञ्चन झरियां न्हावत ललिता ललित खड़ी री। चहूँ दिसन अलि करत कलोलें प्रेम मगन मन मोद बड़ी री॥ कोमल बसन अँगोछत अँग अँग सकुच कुँवरि अति होत अड़ी री। अद्भुत रूप अनूप माधुरी अलबेली अलि नैन गड़ी री॥ ९२॥

मंजन करति कुँवरि अँग अलियां। ल्याईं बिबिध सुगन्ध उबटनो हरषि हरषि हँसि अँग अँग मलियां॥ सकुच कुँवरि अँग अङ्ग दुरावैं प्रेम पुलक अति दुति झलमलियां। न्हावत झारी भरि भरि सजनी मानो खिलीं मोद की कलियां॥ बिसद मनोहर अङ्ग अँगोछे अतिशय दुति दीपति है भलियां। अलबेली अलि मोद बढ़ावैं अद्भुत क-

रत केलि कल रलियां ॥ ६३ ॥

देखि सखी अँग अङ्ग निकाई। उबटन उबट भलक अति बाढ़ी मानो ओप मदन सन पाई ॥ कोटि भानु अति प्रय दुति दीपत सब के नैन चैंध सी छाई। ललिता ललित रूप रस लोभी अलबेलो बहु भांति लड़ाई ॥ ६४ ॥

राग देवगन्धार।

ए दोउ जमुना जल मिलि खेलैं। राजत संग सखीगन सुन्दरि प्रेम पुलकि कल केलैं ॥ छूछू मुख लै जात हैं बुड़की कोउ कर सों कर पेलैं। मानो मैन न्रपति के ढोटा प्रेम भरे रस भेलैं॥ छिपि छिपि जल पिय तिय अँग परसैं सरसैं रस सुखरासी। दुरनि दौरि सखियन के पाछें कुँवरि चौंकि चपला सी ॥ गहि गहि कँवल उखारत मारत हँसि हँसि सांवर अँग मैं। मानो मैन तमालहि सींचत रूप घटा रस रँग मैं ॥ तिरत फिरत सखियन जुत दम्पति अति आनन्द कलोलैं। मानो रूप मीन के छौना करत केलि कल डोलैं ॥ कबहूँ हिलि मिलि छींटन खेलत दै दै सुख पट ओटैं। मानो मैन सैन रस जूटीं करत कटाछन चोटैं॥ निकसी सुन्दरि लै जल चुबकी सुबकी भरत नवेली। मानो इन्दुबधू मंजन करि राजत सङ्ग सहेली॥ बिथुरे बार निवारैं ठाढ़ी हँसत लसत मुख बिगसे। मनो कलङ्क धोय पूरन ससि स्याम जलद तैं निकसे ॥ झीने चीर लगे तन भीने मनु बिन पट झलकाने। बिथकित निरखि लाल रसलम्पट मैन निमेष भुलाने ॥ नवल कपोलन भींजि लगे कच मिहिँ मिहिँ बूंद चुचाने। मानो डारत हैं भरि भरि मुख मधु मकरन्द अघाने ॥ भीं-

जे बसन उतारि चारु अँग पहिरैं नौतन तन मैं । छई सैन मनो मैन नृपति की अलबेली अलि बन मैं ॥ ९५ ॥

कञ्चन कलश भयो उष्णोदक चित्रा अलि लै आई । गहि गहि पानि मलैं अँग अङ्गनि अँगुलिन जल छिरकाई ॥ झारी भरि भरि न्हावैं छिन सों आनँद बेलि बढ़ाई । अँगौछे अङ्ग अनङ्ग जिवावनि रूप छटा छवि छाई ॥ पीताम्बर सुठि सौंधे चरचे दिये दुकूनि पहिराई । बैठे दोऊ रसिक अलबेली केलि करत मन भाई ॥ ९६ ॥

राग अलहिया बिलावल ।

रतन जटित चौकी बनी बैठी कुँवरि विराजैं । सचज सचिक्कन सोहने छुटे केस सुराजैं ॥ ललिता परम विचित्र अति कर मुकुर सुसाजैं । निरखि निरखि अङ्गनि प्रभा निज दृग बिस्राजैं ॥ कर पर दिये कपोल कौं पल पलकनि काजैं । नक बेसर मुक्ता हरै अधरन छवि छाजैं ॥ देखि दसा गति प्रेम की मन मन्मथ लाजैं । अलबेली उमड़नि पयो रस अम्बुधि आजैं ॥ ९७ ॥

कुँवरि बदन पर खुलि रहे सौंधे भीने बार । चन्दन चौकी पर खरी अङ्ग अङ्ग सुकुँवार ॥ सुन्दर मुख पाननि भयो मृदु मुसकनि चार । परत सुगाड़ कपोल मैं तिल स्याम सुढार ॥ अरुन बरन अँगिया बनी उर मोतिन हार । अलबेली चितवनि ललन मन मथित सु मार ॥ ९८ ॥

राग खचो बिलावल ।

बैठे रसिक रसीले रसिया सौंधे उठति झकोरैं । सनबने केस खुले सुठि पाछे मृदुल करनि पिय ढोरैं ॥ कबहुँ

लै लै अञ्चल पोंछत रसलम्पट रस चोरैं । निरखि निरखि मधुकर कल केली अलबेली सुख मोरैं ॥ ९९ ॥

मनिमय चौकी पर अति राजैं सोंधे बार सुकावैं । सह-ज सचिक्कन स्यामल कोमल कर कमलनि सुरझावैं ॥ नख मनि जोति बदन की सोभा उपमा देत लजावैं । पूरन ससि उड़गन अलबेली नील जलद दरसावैं ॥ १०० ॥

सुकवति बारनि नवल नवेली । बार बार कर नखनि निवारति करत पियै मनजेली ॥ निरखि बिबस भयो मन लालन कौ रही न सुध बुध हेली । बार उलटि पट धारि सीस पर भयो अंक अलबेली ॥ १०१ ॥

लाडिली आनँदनिधि सुखदान । मज्जन करि अँग बैठी सुन्दरि कनक सिंहासन आन ॥ सुरझावत कर कञ्ज मृदुल कच नैनन की अरुझान । चन्द बदन मनों नील जलद मैं झलकत दुति झलकान ॥ नखनि दोति नकबेसरि मोती उड़गन जोति लजान । भुजन उलटि कच बांधति जूरौ बांधति मननि सुजान ॥ नैन चकोर ललन तन पुलकित लिये मुकर कर पान । अलबेली अलि निरखि माधुरी वारत तन मन प्रान ॥ १०२ ॥

अथ शृङ्गार को समो ।

सिंगारकुंज लै चली बिसाखा करत मननि मनुहारें । जग मग रही जोति मनिगन की दीपक दोति निवारैं ॥ ठौर ठौर कुसुमावलि फूली मधुप मधुर गुंजारें । अलबेली अलि रतन सिंहासन बैठी अंग सिंगारें ॥ १०३ ॥

ललिता करत सिंगार बिहारनि । हंसि ठान्यो पट सीस

चत्रै परि खोले बार सुधारनि ॥ लटिकारे कारे अति बड़ि-
ड़े खाइ रहे घुंघरारनि । अलबेली पिय मैन मृगनि कों
मानों बाबर डारनि ॥ १०४ ॥

मृदु कर केस सुदेस सँवारें । दै दै सरस सुगन्ध फुले-
लनि उठत सुभग उदगारें ॥ सहज हँसौहीं चितवनि
मुसकनि फिरि फिरि कुंअरि निहारें । अलबेली लखि रूप
सखी जन खरी चित्र अनुसारें ॥ १०५ ॥

कबरी गूंथि रची रुचिकारी । मेदनि सौनजुही चंपक
जुत चित्र बिचित्र सँवारी ॥ अरुन डोरि मोतियनि लरि
बिच बिच मनु बैनी कल धारी । जगमग रही पाछें अलबे-
ली मनों भुअंगम कारी ॥ १०६ ॥

लहिंगा सुभग सुरंग बिराजै कोमल सरस सुगन्धनि
सिंचित मनसिज कोटि निवाजै ॥ जगमग रह्यो सुधंग अंग
मैं पिय नैननि सुख साजै । बरषत रूप अनूप माधुरी अ-
लबेली रति राजै ॥ १०७ ॥

गहैं चरन कल ललन लुभावैं । सहज अरुन मेंहदी रँग
राते जावक चित्र बनावैं ॥ चूंबि चूंबि छुवावति नैननि कों
हिये लिये रहि जावैं । हँसि खैंचत पग जब अलबेली अ-
लि लम्पट सँग धावैं ॥ १०८ ॥

पायनि पायलि जगमग जोती । नव नवरतन दीप से
सोहैं टोरा बड़िड़े मोती ॥ ता पर नूपुर सुभग बिराजैं केलि
कला उद्दोती । अलबेली पिय हिय को गहिनो नवल प्रेम
रस सोती ॥ १०९ ॥

राग देवगन्धार ।

बनी नव रसिक मुकुटमनि आजु। अद्भुत रूपलता मनु फूली नख सिख अँग अँग साजु॥ मज्जन करि सज्जित कच कुसुमनि रंजित बेनी बाम। मानों कनक खम्भ के पाछें लुठत भुअँगिनि स्याम॥ कुन्तल ललन डुलत जुग गण्डन भाल तिलक मधु बिंदु। मानों प्रेम प्रीति जुत सुत निज लियो गोद बुध इंदु॥ राजति रेख रुचिर सेंदुर की मुतियनि माँग सँवारी। मिलन चली मनु रूप के सिन्धुहिं निरबैनी की धारी॥ सीसफूल मनो छत्र बिराजत चन्द्रिका रचित अनूप। रूपसिन्धु के तट मनों राजत भंडा मन्मथ भूप॥ बड़े बड़े नैन अरुन अनियारे अञ्जन जुत रस ऐन। मानो स्रवननि जानि सनेही कहत कछू मधु बैन॥ कुंडल कल ताटङ्क बिराजैं झुमकनि की दुरिकान। मानों सजि सिंगार चारु अति उदित भये जुग भान॥ सुन्दर अरुन अधर अति सोहैं पाननि रँग झलकात। मानों दामिनि की दुति फैली हँसन दसन बिगसात॥ ललित लवङ्ग नवल नासापुट मोती को थहरान। झूमत मनों गयन्द रूप को अधर सुधा करि पान॥ चिबुक तिलौनो लौनो रञ्जन दोनो सखी अनूप। निरखत छबि लालन मन मानो पर्यो प्रेम के कूप॥ कंचुकि सरस सुगन्धनि भीनो झीनी झलक सुदेस। संपुट किये पिय प्राननि मानो कहि न सकत छबि लेस॥ दुलरी चारु हार उर दुरिकत मुतियन लरि की क्रांति। कुच गिरि चढ़ि चली सुमुख रूपनिधि मनों सुरसरि की पांति॥ नाभि गँभीर भीर रससागर त्रिवली रूप तरंग। पैरत पिय मन मीन मनो दिन कुच तूँबनि लै संग॥ भुज

जुग गोल गोल छबिसींवां भूषित भूषन चार। मानों सोभित मैनलता सी रूप समुद्र अपार ॥ रतन जरी पहुँची पहुँचनि मैं खुमकनि चूरी हाथ ।. मनों मैन की सैन सजित अति रतिनागर रति साथ ॥ मुँदरी रतन जटित हाटक की अँगुरिन मैं छबि देत । छला छलै प्रीतम मन मानों हरि हरि प्रानहि लेत ॥ अरुन बरन मेंहँदी कल करतल अति सुन्दर सुकुँवारि। रँगे मनों नवरङ्ग मनोहर पिया प्रेम के प्यार ॥ छाम कटितट अतिही रस पूरित मुखरित किङ्किनि जाल । अति अनुराग भरे मिलि बोलत मनों मैन के बाल ॥ जघन नितम्बनि भार भरे अति रति रस की गहिरान। दई ऊँचि मानो नृप जोबन अपन सजाती जान॥ पायनि पायल नील मनिन को तापर नूपुर स्याम । मनो पिवत मकरँद अलि बैठे अरुन कमल अभिराम ॥ अरुन नील सित हरित जटित नग बिछिया अनुवट हेम । मनो सुरगुरु मङ्गल बुध शुक्र शनि गहि रहे पद भरि प्रेम ॥ जावक चित्र विचित्रित राते नरवन रङ्ग चुचात । झलकि रही अवनी प्रतिविम्बनि मनो बिछये जलजात ॥ अतरौटा अति लाल गुलाली लावनि बेलि जरतारी। सारी नील बरन तन झलकत उदित पङ्कप दुति वारी॥ अङ्ग अङ्ग नव रूप माधुरी बढ़त रहत दिन रैन। प्रेमप्रवाह परे सुखसागर अलबेली अति नैन ॥ ११० ॥

अंगअँग सुन्दर आजुलसी। नौतन तरुन किसोर माधुरी पिय हिय माँझ बसी॥ नील बरन सारी तन सोभित सौंधे बास बसी। चहों ओर मुख कोर किनारी मानों किरन ससी॥ संपुट कर जुग पीन पयोधर कंचुकि कसन कसी। कंपित

मुक्तमाल हारावलि जुगनी उरसि रसी ॥ भुज जुग गोल गोल भूषन युत पिय के अङ्ग गसी । अलबेली अलि रूप तरङ्गनि अँखिया मीन फसी ॥ १११ ॥

राग अलहियाबिलावल ।

रङ्गमहल पिय रँगभन्यो नव कुँवरि सिंगारे । मुकुर सखी सन्मुख भयो मुखचन्द निहारे ॥ सुरभि कुसुम बहु रङ्ग लै गूंथत कच वैनी । अरुन डोरि मुक्ता लरी झलकत सुखदैनी ॥ सेंदुर रेख बनाइ के रचि मांग सँवारी । सीसफूल रतननि जन्यो चन्द्रिका सिर धारी ॥ कुण्डल ललित कपोल पैं मकराकृति झलकैं । बामभाग तिल जगमगै छूटीं दोउ अलकैं ॥ मृगमद तिलक ललाट पैं मधबिंदु बिराजै । नक बेसरि मुक्ता ढरै अधरनि छबि छाजै ॥ अतरौटा कटि केहरी अँगिया उर झीनी । कुच संपुट पिय मन मनों सौंधे सों भीनो ॥ नील बरन सारी सुभग चौकोर किनारी । चुनी चरचि अतरन सरस मृदु अंस सुधारी ॥ मल्हूरी चूरी करन पहुँची अति सोहैं । अरुन रङ्ग मेंहँदी भरे प्रीतम मन मोहैं ॥ मुँदरी हाटक नग जरी अँगुरिन पहिरावैं । चूंबि चूंबि हिय लायकै कर नैननि छुवैं ॥ चम्पकली दुलरी गरें उर तरलित हारा । मनभाए अङ्गनि परसि रचि रचि सिङ्गारा ॥ निरषि मुकर अँग अङ्ग कुँवरि रीझी नव बाला । अधरसुधा दोनौ पियै उर उरज रसाला ॥ करत हास परिहास बिबि अद्भुत रस केली । तरु तमाल पिय उर लगी मनों कञ्चन वेली ॥ बिलसत रङ्ग मनोज के दिन रैन न जाने । अलबेली अलि सहचरी लखि नैन सिराने ॥ ११२ ॥

राग खटोविलावल।

ल्याई भोग सखी हितकारी। भाजन कनक धरे भरि आगें बहु विंजन रुचिकारी॥ हँसि हँसि गसा लेत सुंदर मुख अरस परस पिय प्यारी। लिये रहैं कर कौर बीचही हँसि हँसि बदन निहारी॥ कबहूँ ललन देत प्यारी मुख चितवनि रूपउँज्यारी। एकहि टेक रहे हग मानो रूप ठगौरी डारी॥ जल अँचवाइ दई मुख बीरी रचि रचि लै.ग सुप्यारी। अलबेली अवसेष लियो सो जो कछु रह्यो निज थारी॥ ११३॥

जेंवत कुंजन मैं पिय प्यारी। पिस्ता दाख चिरौंजी मेवा आनि धरी भरि थारी॥ ठाढ़ीं लिये सखी भरि भाजन विविध सौंज रुचिकारी। देत कौर पिय स्याम मुदित मन हँसि हँसि मुख सुकुँवारी॥ अरस परस अतिहीं रस उपजत हँसि हँसि रहत निहारी। अलबेली अलि आनँद की निधि करत प्रान बलिहारी॥ ११४॥

आरति करत श्री ललित कुँवरि की। कोटि भानु दुति रूप सुँदरि की॥ राजत कनक सिंहासन स्यामा। अद्भुत रूप अनूपऽभिरामा॥ सारँगी बीन प्रवीन बजावैं। पदगति नूपुर सुरनि मिलावैं॥ प्रेम मुदित अलि चँवर ढुरावैं। जय जय शब्द पुहुप बरषावैं॥ अङ्गनि दुति फैली बन जोती। पच फूल मनों कुन्दन होती॥ निरषि निरषि अँग अङ्ग निकाई। अलबेली अलि बलि बलि जाई॥ ११५॥

राग अलहिया बिलावल।

कञ्चन चौकी पैं परी गोरी पान चबावै। निरषि निरषि

कर आरसी बैंदी भाल बनावै ॥ कुण्डल जुग गण्डन अलक मृदु मुख मुसिक्यावै । बेसरि कौ मोती ललित अधरनि झलकावै ॥ कज्जल रेखा अति बनी नैननि मधु प्यावै । अलबेली अलि ससि बदन लखि लखि जिय ज्यावै ॥ ११६ ॥

पायनि मैं पायल लसैं तापर नूपुर राजैं । मानौं सावक हंस के मधु मधुर सुबाजैं ॥ त्रिकुटी अनवट अति बने बिछियां छबि छाजैं । नख मनिगन सोभा बनी ससि सूरज लाजैं ॥ मिंहदी रंग सुरँग रँगे जावक सुख साजैं । अलबेली अलि प्रिय मैं ऐसे चरन बिराजैं ॥ ११७ ॥

बैंदी लसत ललाट पें जगमग नग जोती । झूमत रूप गयन्द सो बेसरि कौ मोती ॥ झलकत नवल कपोल पै कल कुण्डल दोती । अलबेली अँग अंग छबि अद्भुत रस सोती ॥

लाडिली अङ्ग अङ्ग सुकुँवारि । परम चतुर गुन रूप अनूपम नख सिख सजि सिंगारि ॥ गूंथित चम्प जुही कल बैनी सेंदुर मांग सँवारि । बेसरि नग जुत राजति नीकी लटकन ललित सुढारि ॥ कुण्डल लोल कपोलन मण्डित झलकनि झलक अपारि । तरल तय्योना काननि झलकैं अलक तिलक छबि चारि ॥ रंजित गण्डनि गाड़ स्याम लिख चिबुक बिंदु दृग जारि । अलबेली अलि मन्द हँसन छबि दिन प्रति नैन निहारि ॥ ११८ ॥

राग आसावरी ।

रूपरासि नव सुन्दर स्यामा । अद्भुत रूप अनूप अभिरामा ॥ पहिरें नील बरन तन सारी । कनक बरन तन दुति सुकुँवारी ॥ अँगिया अरुन कसनि अति गाढ़ी । झलकत दुति

अनुपम छवि बाढ़ी ॥ श्रीफल कुच सम्पुट सरसाने। कम्पित चार हिये थहराने॥ कुंकुम रंग विचित्रित चित्रा। मोतिन दुलरी पोत पवित्रा॥ खुमकि रहीं चूरी मखतूली। पहुँची चारु लसत सम तूली॥ सीसफूल मनिगन की जोती। थरथरात बेसरि को मोती॥ कुण्डल लोल कपोलन झलकैं। छूटीं कुटिल सुभग जुग अलकैं॥ चिबुक बिंदु बर स्याम सलोना। बाम भाग तिल दयौ ढ़ठौना॥ अरुन अधर माड़िक मद शोभा। कुन्दकली दसननि की सोभा॥ म्रगमद तिलक सुचारु बिराजै। रतन जटित बैना छवि छाजै॥ नैननि अंजन रेख बनाई। लाज भरी अँखियनि मुसिकाई॥ चरननि मनि मंजीर सुबोलैं। मनों सावक कल हंस कलोलैं॥ नख तरवनि की मंजु ललाई। चहों ओर अवनी छवि छाई॥ अँग अँग की छवि कही न जाई। निरखि नैन पिय रहे लुभाई॥ छिन छिन छबि रस घन सो बरसैं। त्रपति न पिय चातक द्रग तरसैं॥ अलबेली अलि रूप अपारा। जिन पायौ पायौ रस सारा॥ १६० ॥

नव नागरि बर सुन्दरि गोरी। प्रेम पुलकि अतिसै द्युति दीपति सुरत समुद्र झकोरी॥ पहिरें नील बरन तन सारी बिबिध सुगन्धन बोरी। कंचुकि रङ्ग सुरङ्ग बनी उर दुरे कनक कुचकोरी॥ गूंथित सुसुम कुसुम जल बैनी चित्रित कच बिच रोरी। छूटी अलक झलक कल कुण्डल आकरषत चित चोरी॥ भाल बिशाल तिलक छत सुंदर अंजन रेख खचो री। झलकत झलक सुभग नक बेसरि अरुनई अधर न थोरी॥ चिबुक बिंदु बर इंदु बदन छबि चरनि प्रान

बरजोरी । नवल कपोलनि गाड़ परति अति हँसत चितव मुख मोरी ॥ निरखि छके छबि स्याम मनोहर बँधी प्रेम की डोरी । अलबेली नैननि धन जीवन नौ तन कुंवरि किशोरी॥

राजत आजु कुँवरि अति नीकी । नौ तन तरुनि किशोरि नागरी रसिकनि जीवनि जी की ॥ सुंदर चन्द बदन मुसिकनि मैं सींचत बेलि अमी की। अलबेलीअलि निरखि माधुरी हिलग बढ़ी अति ही की ॥ १२२ ॥

आवत बन घन कुंजन प्यारी। पहरें बिबिध बसन तन भूषन सुन्दर रूप उँज्यारी ॥ फूलन फलन फली बहु बिधि सों झूल रही द्रुम डारी । उझकि उझकि गहि डारिन झूलत फूलत हरषि हियारी ॥ नूपुर कल किंकिनि धुनि सुनि सुनि कुहकत मोर महा री। लतन ओट दुरि दुरि दामिनि सी गहन चहत सुकुंवारी ॥ डोलत बिपिन सघन रस बरषत सींचत रूप सुधा री । अलबेलीअलि प्रान रजनि दिन अँखियन जीव जिवारी ॥ १२३ ॥

बिहरत बन घन कुंजन माहीं । नवल कुँवरि नव स्याम मनोहर दियें भुजा गर बाहीं ॥ ठाढ़े लतन ओट गहि डारिन प्रसन अङ्ग सकुचाहीं । अति अनुराग भरे तन पुलकित सुंदर मुख मुरिक्याहीं॥ प्रीतम हार उरज उर परसत कुँवरि करन झटिकाहीं । अलबेलीअलि दिन प्रति नागर कौतिक केलि कराहीं ॥ १२४ ॥

राग सारंग।

ठाढ़े कदम कुंज परछाईं । सुभग सीस मृदु अंचल डारें रस बतियनि बतराहीं ॥ एक भुजा गहि डार कुसुम कर

एक हियें गरबाहीं । अलबेली अँग अङ्ग पुलकि तन अद्भुत केलि कराहीं ॥ १२५ ॥

बैठे सघन निकुञ्ज मञ्जु मैं राजत नवल किशोर किशोरी । नृत्तत मोर अलापत पिक शुक प्रेम भरे डोलत बन खोरी ॥ बरन बरन फूलीं बनबेली कूजत मधु धुनि थोरी थोरी । ठौर ठौर जलजंत्र छुटत अति बरषत आनँद रस चहुँ ओरी ॥ करत बिलास हासरस सींचत चन्द बदन पिय नैन चकोरी । अलबेलीअलि बीन लियें कर मधुर तान गावत रस बोरी ॥ १२६ ॥

बैठे रसिक निकुञ्जनि माहीं । फूलनि फूलि रहीं रस-बेली फरन फरीं अवनी लगि जाहीं ॥ डोलत मोर मराल मुदित मन अलिकुल मिलि सुर सब्द कराहीं । अलबेली अलि केलि करत कल प्रेम मगन दीन्हे गर बाहीं ॥ १२७ ॥

बैठे सघन कुंज में सजनी कौतिक केलि करें री । प्रेम प्रवाह परे रससागर रङ्ग अनङ्ग ढरें री ॥ प्रीतम हार उ-रज उर परसत हँसि हँसि अङ्क भरें री । हँसि मुसिक्याइ लजाइ भामिनी टारत करनि परें री ॥ पुलकित अङ्ग अनङ्ग भयो पिय भुज भरि धाइ धरें री । अलबेलीअलि निरखि छके छबि नैन न नेकु टरें री ॥ १२८ ॥

अथ राजभोग को समो ।

चलि दोउ बलि मिलि भोजन कीजै । करे पाक रुचि रुचि के सजनी रचि रचि कौर प्रिया मुख दीजै ॥ दूजो जाम जात दिन बीतत अब काहे बलि बिलँब करीजै । अतिही सुख उपजै बलि जाऊं यह लाहो नैननि कौ लीजै ॥ कहि

कहि ललित भावती बतियनि बोवति क्यों न प्रेमरस बीजै। अलबेलीअलि नैननि भरि २ रूप रसासव सुख सों पीजै॥

भोजन कुंज मंजु मैं सजनी राजत अति अनुराग भरें री। बैठे अद्भुत रतन सिंहासन दम्पति रङ्ग अनङ्ग ढरें री॥ भूषन बसन उतारन मिस पिय हँसि हँसि लगि लगि जात गरें री। चितै रहत छबि चारु छके दृग अतिही प्रेम प्रवाह परें री॥ विविध भांति के बिञ्जन सजनी भरि भरि भाजन आनि धरें री। अलबेलीअलि दोउ मिलि जेंवत हँसि हँसि कौतिक केलि करें री॥ १३०॥

जेंवत सघन कुञ्ज में दोऊ अरस परस पिय प्यारी। षट रस बिंजन चारु विविध सखि राखत भरि भरि थारी॥ बहुत भांति की खीरि बनी अति सरस सुगंध सुधारी। पीत भात अरु दूध मिलो कछु अति सुन्दर रुचिकारी॥ चौरा मधुर मिहीं सँवी रसभींजी दूध मँझारी। औरौ बहुतिक पाक दूध के रचे सखी हितकारी॥ कढ़ी पकौरी दही मिली कछु और बहुत तरकारी। दहीवरे घोरे कछु कोरे साक फलौरी न्यारी॥ दारि उर्द अरु मूंग चना की लौगनि सरस सँवारी। भाजी साक बहुत विधि कीने जिय की जाननि हारी॥ बरी मँगौरी बनी तिरौरी मिर्च लायची डारी। चरपरे खाटे बने निमैाने लौने रुचि अनुसारी॥ तौंवा तुरई अरई सूरन सेम कली कचनारी। ककोरा केरा करे करेला बैंगन बढल कठारी॥ कचालु रुचिर रितालू ढेंढस और बहुत तरकारी। सुन्दर कुँवरि भांवती जिय की रची चतुर परचारी॥ अमरस आब मुरब्बा नीके सरस रुचिन सुकुँ-

वारी। छना पना सिखरन अति गाढ्यौ मठा सुगन्ध दुँघारी॥ नेबू आब कलौंजी अदरक परसे बहुत अचारी। भाति भांति के करे रायता परम चतुर सहचारी॥ अतिहीं सुथरी पतरी रोटी घी सैं। सरस ढरारी। परांवठी बेढ़ीरु दुपरती बेसनि सरस करारी॥ पापर कचरी चूरन चटनी चरपरि और खटारी। लुचई मोहनभोग जलेबी बेसनी पुआ सुहारी॥ नखरे सखरे पाक और बहु कहँ लगि कहुँ बिस्तारी। सबै सखी मिलि परसें हरषैं रस बरषैं अति भारी॥ हँसि २ गसा लेत मुख दोऊ उपजत मोद महा री। बिच बिच प्रेम भिदी बतियां कहैं सुन्दर बदन निहारी॥ कबहुँक कौर ललन प्यारी मुख देत सँभारि सँभारी। करत ओट पट फेरि बदन ससि सुन्दर रूप उँज्यारी॥ कबहुँक हँसि कर सौं कर पेलति झेलत अति रस सारी। चरन गहें रहि जात नवल पिय कहत मुदित हाहा री॥ करत केलि कौतिक मिलि दोऊ जिनकैं रूप अहारी। एकहिं टेक रहे लखि दम्पति परे पेच दृग चारी॥ बकूक पायो दोउ मिलि सजनी ल्याईं भरि जल झारी। जल अँचवाय दई मुख बीरी रचि रचि लौंग सुपारी॥ आनँद बढ्यौ कहां लगि बरनौं रची रुचिर ज्यौनारी। अलबेली अवशेष लियौ कछु परम प्रेम रससारी॥ १३१॥

भोजन करत भवन में दोऊ अति आनँद रँग बरसैं। छप्पन भोग छतीसौं बिंजन हरषि हरषि सखि परसैं॥ मेवा मिश्री डारि चारु अति रची खीरि रुचिकारी। दूध भात अरु पीत मनोहर सेवीं सरस सँवारी॥ फिरनी चौरा चारु

रुचिर अति अरु दधिलपसी नीकी। मोहनभोग जलेबी ब-
रफी भावति जीवन जी की॥ घेवर बावर गूँझा लाडू मठरी
मगद मलाई। लुचई पुवा बेसनी पूरी सद्दचर‍ि रुचिर बनाई॥
खाटी चरपरि कढ़ी पकौरी दही मिली कछु न्यारी। बरी
मँगौरी साग फुलौरी दारि बहुत परकारी॥ दही बरे घोरे
कछु कोरे सुन्दर सरस सलौने। पान मिलाइ पतौरा कीने
रचि रचि रुचिर नमौने॥ तौंबा तुरई पेड़ा मोठा बैंगन सेम
रिताल। अरई केरा करे करैला ढेंढ़स और कचालू॥ कटल
बढ़ल कचनार कली अति घी सौं सरस सुधारी। औरौ ब-
हुत भांति तरकारी अतिहिं रुचित पिय प्यारी॥ मेथी ब-
थुआ साक सँवारे भाजी बहु परकारी। छना पना सिखरन
अति मीठौ मठा सुगन्ध दुधारी॥ नेबू अदरक आंब आंवरे
सूरन अमरस चारी। भांति भांति के धरे मुरब्बा मिर्च
लायची डारी॥ कोमल पतरे सुथरे फुलका घी सौं सरस
ढरारे। बढ़िवी बसनी और दुपरती तिनके स्वादहुँ न्यारे॥
पापर चारु तले अति घी सौं चटनी चूरन नीके। दूध मिली
रोटी कछु मीठी पावत भावते जी के॥ खात खवावत हँसत
हँसावत सुंदर रूप उँज्यारे। निरखत सौंज लियें अलि
ठाढ़ी नैना टरत न टारे॥ पूंछि पूंछि कर बर अंचल सौं देति
कुँवरि मुख माहीं। न्यारे न्यारे स्वादमनोहर ललन दिखा-
वत जाहीं॥ कबहुँक बिंजन बूंद परत उर पूंछिन मिस कर
धारैं। अतिहीं चतुर नवल नवनागरि हँस कर सौं कर टारैं
लियें रहत कर कौर बीचहीं हँसि२ बदन निहारैं। पेंच परे
मानों अँखियन के कहुँ कहुँ मुख अनुसारैं॥ ललिता बा-

तन रुचि उपजावत दै दै चौप जिवावैं। लियें बीन इक सन्मुख सुन्दरि मीठी तान सुनावैं ॥ आनँद भरीं खरीं अलियन सब चितै रहीं चहुँ ओरैं। प्रेम मगन मन नैन सजल अति लियें चँवर सिर ढोरैं ॥ सौंधौ जल सीतल भरि झारी ध्यावत मुख सुख बरषैं। देत पान रचि रचि हँसि सजनो अति आनंद मन हरषैं ॥ गुहि गुहि चारु हार फूलन के सुन्दर गर पहिरावैं। मरगजि माल उगाल रीझि मुख अलबेलीअलि पावैं ॥ १३२ ॥

आरति करत सखी कर जोरैं कंचन थारि बारि दीपक कुल फैली अँग अँग दुति चहुंओरैं ॥ रूप सिंहासन राजत सुन्दर आनन्द भरी चवँर सिर ढोरैं। बरषति पहुप निरखि सुख सजनी अलबेली अलि चन्द चकोरैं ॥ १३३ ॥

फूलनि मंजु निकुंज बनी री। किसलय दल बल सेज रची रुचि सौंधे सरस सनी री॥ आवति पवन परसि परिमल सौं अति उदगार छनो री। गुंजत अलिकुल कोकिल कल मिलि बोलत मधुर धुनी री ॥ अति अनुराग भरे राजत विव बरषत मौज घनी री। नौ तन तरुनि किशोर सांवरो स्यामा मुकट मनी री ॥ नीलम्बर झीनौ पट ओढ़ें पौढ़े रूप धनी री। अलबेलो अलि अंग अंग छवि नैननि मांझ ठनी री ॥ १३४ ॥

राजत बन की कुंजन फूलें। सघन लता द्रुम फूलनि छाई बरन बरन डारिन फल झूलें ॥ गुंजत मधुर मनोहर बानी परिमल लुबध फिरत अति भूलें। नृत्तत मोर मराल मुदित मन कूजित पिक शुक जमुना कूलें ॥ ठौर ठौर

जल जंत्र छूटत अति मनु फुव झरी समर सम तूलैं। निरखि निरखि हर्षित मन मोहन कसे सुदृढ़ दम्पति भुज मूलैं॥ करत विलास हास रस बरषत पहिरे अंग अनंग दुकूलैं। अलबेली अलि रसिक नागरी मेटत पिय हिय मनसिज सूलैं॥ १३५॥

नवल निकुंज मंजु में सजनी अति अनुराग भरे दोउ राजैं। लोचन लाल ललित ललचौहें अँग अँग कोटि मदन दल साजैं॥ झूमि रहीं कुसुमावलि बेलीं परिमल लुब्ध गुंजत अलि डोलें। अति आनन्द भरे शुक सारक मधुर २ वर बानी बोलैं॥ सौंधे जल जलजंत्र छुटत अति मानो आनँद रस घन बरषैं। राजत सुभग सेज नव नागर निरखि२ छबिबन मन हरषैं॥ मृदुल भुजा कल कण्ठनि दीने प्रेम पुलकि अँग अङ्गनि झलकैं। विवध विलास हास रस बरषत उठत मिथुन मन मदन की ललकैं॥ करत पान परिरंभन कच कुच उचित सबै अंगनि पिय परसैं। अलबेली अलि छकन छके विव रहत मुदित जोबन मद भर सैं॥ १३६॥

बैठे सेज नागरी नागर करत भांवती बतियां। अरुझे तन मन नेह भरे बिबि लागत हँसि हँसि छतियां॥ प्रीतम हार उरज उर परसत सरस केलि की घतियां। अलबेली अलि जानत नाहिंन कित बासर कित रतियां॥ १३७॥

कौन की अँखियन अंजन नीको। झगरत अरस परस रस नागर आनँद मोद बढ़ावत ही को॥ आनन लगि बिबि मुकर निहारत देखौ कौन ललित को फीको। अलबेली पिय कंठ लगावत हूंन मैननि मैं जीवन जी को॥ १३८॥

रूप में अटके री नैना मेरे। तेरेइ रंग रँगे निस बासर भये मोल के चेरे॥ पलक ओट कोटिक जुग मानत बीतत कलप घनेरे। अलबेलीअलि हँसि चितवत जब जिवत जिवाएँ तेरे॥ १३९॥

नैन निकुञ्ज बनी सुकुँवारी। डोरी अरुन नेह रँगराती पुतरी स्वेत (?) सुसेज सँवारी॥ मन के करन चरन सहराऊँ पोत पलक के परदा डारी। अलबेली सुख सैन करौ बलि नवनागरि नव रूप उँज्यारी॥ १४०॥

संग रहैं भरि रंग निरन्तर भूषन अंगन ह्वै बसिहैं। चिबुक तिलौनो लोनो रंजन अंजन नैननि मैं लसिहैं॥ करनफूल नव नील कपोलन अलक तिलक भौंहन कसिहैं। सहज लहैं सम्पति अलबेली नव उर जन मृगमद रसिहैं॥

राजत रसिक रसीले रसिया नवल निकुञ्ज सघन बन माहीं। ओढ़ें सरस बसन्ती दुपटा कनक नील तन दुति झलकाहीं॥ सिर तर सुमन उसीसा दीन्हे प्रेम मुदित अँग अँग लपटाने। करत बिलास बिनोद बिविधि बिधि मदन मनोज उरज सरसाने॥ गौर स्याम भुज चारु कसी दृढ़ तरु तमाल मनु कंचन बेली। नूपुर रव किंकिनि कल भूषन मथत मदसि मनमथ रसकेली॥ अरझे हार बार मुख स्रमकन सिथल कसन पट बंधन ढीले। अलबेलीअलि नैन बैन मन आरस बस अँग रंग रँगीले॥ १४२॥

आजु निकुञ्ज मंजु मैं सजनी बरषत रंग नयौ। अरझि रहीं भुज चारु हार पिय अँग अँग प्रेम छयौ॥ करत बिबस पिय प्रान चितै हँसि कौतिक केलि कियौ। चुम्बत नैन

चटिक नासापुट अधरन सुरस दयौ ॥ रति नागर रति केलि बढ़ावत मनु रति बीज बयौ ॥ अलबेली अलि सींच सुधारस मैन तमाल भयौ ॥ १४३ ॥

नवल निकुंज मंजु मैं नागर रस चौपर बिस्तारी । कुटिल कटाक्ष चलत दृग पासे मदन उरसि बिसात रस सारी ॥ नव नव केलि करत कल कामिनि खेलत रसिक बिहारी । नाहिन हार जीति अलबेली परम बिचित्र खिलारी ॥ ॥ १४४ ॥

नव नागरि नव नागर सुंदर नव रस चौपर चाहु रची री । नव नव रङ्ग मनोज मदन के षोड़स सरस सुसार सची री ॥ नैन कटाक्ष चलत अति पासे उर बिसात रस प्रेम पचीरी । हाव भाव बिव दाव बदित मुख किंकिनि नूपुर कलह मचीरी ॥ श्रीफल कुच जुग रंग सरसानो जीतत पिय मन नैन नचीरी । अलबेली अलि खेल रंग कौ जानत कुँवरि बिचित्र जचीरी ॥ १४५ ॥

आजु बनी नव कुञ्ज मनोहर नवल कुंवरि नव रसिक बिहारी । नइ नइ केलि करत नव नागर भींजे नवल नेह पिय प्यारी ॥ अटके नवल रसीले रसिया अरभि रही कंठन भुज चारी । हँसि हँसि जात समाति हिये में नवल स्याम नव रूप उँज्यारी ॥ पुलकि कपोल लोल लोचन अति पीवत नवल सुधा घरि सारी । अलबेली दृग मीन कलोल नवल प्रेम रस सिन्धु मझारी ॥ १४६ ॥

राजति आजु कुंवरि रस फूली । सरस सुधंग अंग नागर के हियें बिमल भुज मूली ॥ पान भरे मुख पुलकि कपो-

लन मदन हिंडोरें झूली। अलबेली अलि रूप माधुरी नैन निमष लषि भूली ॥ १४७ ॥

अथ उत्थापन को समो १ राग पूर्वी ॥

घरी चारु दिन रह्यौ पाछिलो प्रान प्रिया सों कह्यौ जब मोहन। सघन विपिन अति फूलन फल्यो भयो समैयो सुन्दर सोहन ॥ बरन बरन पंछी बन बोलत डोलत मोर मयूरी गोहन। अलबेली अलि कहत रूप लियें चलहौ बन जिन छैहौ कोहन ॥ १४८ ॥

निकट समैयो जानि उथापन कुञ्ज भवन अलि आईं। सौंधे चरचे बागे चुनि चुनि नौतन हित सों ल्याईं ॥ भूषन विविध सुमन कुसुमनि के भरि भरि डलियां धाईं। आनँद मगन भरीं सब डोलें चाहत कुंवरि लड़ाईं ॥ ललिता परम प्रवीन बिचित्रित जतननि प्रिया जगाईं। करि बिनोद मिल अलबेली अलि बन फूलनि महकाईं ॥ १४९ ॥

उठि बैठे दोऊ सेज सुहाई। लोचन ललित लाल अरसौंहैं आरस अँग अँग लेत जँभाई ॥ सौंधौ जल सीतल भरि झारी लै आईं सजनी सुखदाई। ललिता ललित मुख ध्वावति ठाढ़ी अलबेली अलि लखि बलि जाई ॥ १५०

औसर जानि उथापन सजनी लै आईं भरि भोजन थारी। पिस्ता दाख चिरोंजी मोदिक मिश्री अरु बादाम संवारी ॥ कोमल मधुर तरबुज खरबुजे नारंगी अरु सेव अनारी। बिही आंब अंगूर ऽरु केला सरबत सरस सुगन्ध सुधारी ॥ हँसि हँसि खात खवावत सजनी अरुझि रहे लोचन अति चारी। अति आसक्त भरे हाथन पिय देत कौर

मुख कुँवरि निहारी ॥ कबहूँ लेत कबहूँ कर पेलत अतिही सुन्दर रूप उँज्यारी। अलबेली अलि पान भरे मुख लखि लखि प्रान करत बलिहारी ॥ १५१ ॥

बन की सघन कुञ्ज बन बैठे करत सिंगार परस्पर दोऊ। चितै चितै रहि जात कहूँ कहूँ हँसि हँसि सखी सँवारति सोऊ । अलबेली अलि नवल कुँवरि वर नैननि को भूषन दिन होऊ ॥ १५२ ॥

बैठे बन की कुञ्ज रँगीले ल्याईं सौंज उथापन अलियां। भूषन बसन मनिन कुसुमनि के हरषि हरषि राखीं भरि डलियां ॥ ललिता ललित अङ्ग पहिरावैं हँसि हँसि करत केलि कल रलियां। अलबेली अलि खरीं चहों दिसि फूलीं मनो मनोरथ कलियां ॥ १५३ ॥

देखि सखी नव रूप किशोरी । अङ्ग अङ्ग की सहज माधुरी उमड़ी नाहिन थोरी ॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारो अँखियां रस रँग बोरी । कंचुकि रंग सुरङ्ग बनी उर झलकति दुति कुचकोरी ॥ कण्ठ बनी जुगनी हीरन की मोतिन लरि दो दो री ।नासापुट वेसरि कौ मोती रूप बूंद झलको री ॥ कुन्द कली दसननि की सोभा अधर बिम्ब चित चोरी। मुसकनि सहज हँसौहीं चितवनि बांधत मन बरजोरी॥ कुसुम गलित लटकति लट अंसनि सिथिल भई कचडोरी । अलबेली अलि अँखियन सींचत रूप तरङ्ग झकोरी ॥ १५४ ॥

नव नव पानिप अँगन चढ़ी री । नव किशोर नव रूप माधुरी सुन्दरता की रासि बढ़ी री ॥ मानों मदन बिचित्र

मथन मन पुतरी नव नव रूप गढ़ी री। अलबेली छिनवनि चित चोरत मानो मोहन मंत्र पढ़ी री ॥ १५५ ॥

लटकि चले नव नागरि नागर देखत बन की गहबर गलियां। मनो मृगिन की माल छकी छबि आवत चहुँदिसि लगिं सब अलियां ॥ ठठकि ठठकि गहि डारि द्रुमन की हँसि हँसि करत केलि कल रलियां। अलबेली अलि पान भरे मुख मानो फुलीं मोद की कलियां ॥ १५६ ॥

बन की कुञ्जन कुञ्जन देखत आवत दोउ भुज अंसन दीयें। लटकि चलत अति डगमगे पायनि मानो प्रेम सुधा रस पीयें ॥ ठठकि रहति गहि डारि द्रुमनि की झूमि झूमि लागत पिय हीयें। अलबेली अलि की स्वामिनि कों रूप माल लालन उर कीयें ॥ १५७ ॥

फबि रह्यो सीस कहूँभी फेटा। प्रेम के रङ्ग रँग्यो मनो मोहन लटपटे पेंचनमेंठ लपेटा॥ झुकन झुकी कलगी ता ऊपर बेंदि भाल ससि सुत बुध भेटा। अलबेली अलि की सुख स्वामिनि भामिनि कोटि मदन मद मेटा ॥ १५८ ॥

कुँवरि के सीस फेंटा बन बैठा। बिच बिच बूटी लसत जरी की लटपटे पेचन ललिति अमेठा॥ ताऊपर तुर्रा कलगी युत मोति कोर झुकि रही सु ऐठा। बेंदी भाल दिपति अलबेली मानो ससि बुध कियो अकेठा॥ १५९ ॥

झमक झमक रही तन सारी। चुनो चरचि अतरन जुत सुन्दर जगमग रहि चौकोर किनारी ॥ चलत ललित बनमाल हिये पर कुच कुंकुम रंजित छबि न्यारी। छकी छैल नव रूपमाधरी अलबेली अलि जीव जिवारी॥ १६० ॥

ऊधौ सीस फेंटा फबि रह्यो है किशोरी जू कें बीच बीच बूंटो जरतारिन की जगमगें। झूकि रही कलगी तापै मोती छोर छलैदुलै खुले केसपास पाछें सौंधे सौं सगबगें॥ केसरि कौ खौर कियें चिये हार थरहरात पियें प्रेम मादिक पग परत अवनि डगमगें। अलबेली अलि रञ्जन मन नैननि मैं अञ्जन अति लियें करन फूल छरी खरीं रूप रगमगें॥ १६१॥

राग मलार।

रूप घटा उमड़ी अँग गोरें। नीलाम्बर फहरात सुभग तन मानों नव घनघोरें॥ हँसनि दर्सनि दामिनि सी कौंधित उपमा कहत लजावै। अञ्चल चलन चलन सुन्दर मुख चन्द सी दुरि दुरि जावै॥ छनका री (?) जुगनू सो चमकत अरुन बिंदु छबि बाढ़ो। किरन किनारी सुभग बिराजत इन्द्रधनुष मनु काढ़ो॥ बरषत अङ्ग सुधङ्ग माधुरी सींचत मन्मथ मूले। नेह भरी अँखियां नदियां सी उरज सरोज से फूले॥ तोरत मेंढि नेम मरजादा त्रिबली लहरि झकोरें। अलबेली अलि मीन मन अंखियां तिरत फिरत निसि भोरें॥ १६२॥

आजु कुँवरि नव रूप घटा सी। चातक लालन दृग दिन पोषत बरषत छबि बरषासी॥ नीलाम्बर सारी तन सोभित चहुंदिस किरन किनारी। नव घन में पूरन ससि मानों इंद्र धनुष ढिग डारी॥ हँसत लसत कौंधित दामिनिसी दसन चोंप अति दमकें। जगमग रहे मनिगन भूषण के मनु जुगनू से चमकें॥ नेह भरी अँखियां नदियां सी उरज

सरोज रसाला। त्रिबली रूप तरंगनि सचत पिय मन मैन तमाला॥ उमड़ि ढरी पिय प्रेम के सिन्धुहिं ढाहत मनसिज कूले। अलबेली अलि नैन मीन से डोलत अति रस फूले ॥१६३॥

राग बसन्त॥

आयौ बन ठन प्यारी जूके अङ्गनि नव जोबन ऋतुराव। धरे द्वार मनो कनक कलश शुभ भयो कुच जुग सरसाव॥ उलही नूतन रूप मञ्जरी प्रेम फूल पुलिकाव। दसन बसन पल्लव अरुनाई उदयौ अति चित चाव॥ लाल गुलाल उड़त मुसिकनि में अगर मोद ऊलसाव। मारत गेंद सी नैन कटाछन पिय हिय सहज सुभाव॥ नवलासी दोउ लिये नेहकी कहा कहूं उत्साव। सन्तत रूप बसन्त अलबेली नैनन मांझ समाव॥१६४॥

सजनी देखि राधा रूप। मनो बसन्त अनन्त फल्यो अँग अँग मनसिज भूप॥ अरुण अधर पल्लव अति उलहे मंजरी रूप रसाल। कनक कुंभ कुच रंग भरे मनों मुसकनि लाल गुलाल॥ नवलासी नव लिये नेह को राजत सखि गन संग। मारत गेंद सी नैन कटाछन प्रीतम अंग अनङ्ग॥ चितवनि चारु चलत पिचकारी भरी प्यार के रंग। अलबेली अलि नैनन फूल्यौ मधु ऋतु रूप अभंग॥१६५॥

राग पूरबी॥

ए दोउ राजत रंग भरे री। भुज जोरें सांवल तन गोरें गहि द्रुम डारि खरे री॥ पुलकत अङ्ग अनङ्ग छके छबि बातन रङ्ग ढरे री। पान भरे मुख सुख सरसाने अरुझाने

दृग पल बिसरे री॥ नवल छैल चितवत प्रीतम तन हँसि हँसि प्रान हरे री। अलबेली अलि रूप तरङ्गनि नैना मीन परे री॥ १९६॥

हँसि हँसि बात करत गहि डारिन सघन कुंज दोऊ जन ठाढ़े। करत हास रस रास मनोहर परि रहे भुज जुग बन्धन गाढ़े॥ अलक सँवारन मिस पिय परसत नवल कपोलन रँग रस बाढ़े। अलबेली अलि ठौर रहीं लखि चित्र से मानो चहूंदिस काढ़े॥ १९७॥

प्यारी तेरे बडे बड़े नैन सलोने। चंचल चपल अरुन अनियारे चितवनि मैं करैं टौने॥ मान भरे उजरे अति नीके मनों रस रूप के दौने। अलबेली अलि बदन कमल पर पीवत मधु अलिछौने॥ १९८॥

प्यारी तेरे नैननि कौ व्यौहार। रूप तुरङ्ग चढ़े मदमाते मृग मन करत सिकार॥ भौंह कमान रहीं चढ़ि दिन प्रति चितवनि बान सु चार। सहज अरुन अति घूम घुमारे खूनी घन घुमार॥ कज्जल रेष अनी अति तीषी निरषि डरत सत मार। अलबेली अलि प्रान विहंगम परे प्रेम के जार॥ १९९॥

जहँ जहँ चरन धरत प्यारी तूं हूँ नैननि पांवड़े बनाऊँ। जब जब चलत सघन बन बीथिन चुन चुन हूँ मग फूल बिछाऊँ॥ जब बैठै प्यारी रूप सिंहासन हूँ ठाढ़ो सिर चँवर ढुराऊँ। जित चितवत फूलन तन प्यारी हूँ गुहि भूषन अँग पहिराऊँ॥ जब सुन्दरि सुख सेज बिराजत पुलकि पुलकि चरनन सहिराऊँ। जबहिं ढुरत रस बतियन मोसौं अल-

बेली अलि बलि बलि जाऊँ ॥ १७० ॥

जब जानी प्रिया रङ्ग ढरो री। चिबुक चारु हँसि हँसि टकटोलत कहत बात लालन मधुरी री ॥ अतिहि प्रसन्न बदन दिन देखौ राखौ जिन कहुँ भौंह मुरी री। बड़ भागी निरखत सुख सजनी अलबेली बन कुञ्ज दुरी री ॥ १७१

जबलगि देखौं तुव मुख सुन्दरि तबलगि प्रान रहत हैं तन में। अलक पलक पट ओट अँतर तें कोटि कलप जुग बीतत छन में ॥ रूखो लागत सब अँग मोकों नेक रूखाई भौंह करन में। अलबेली अलि नवल कँवल सो फुल्यो रहै मुख इन नैनन में ॥ १९२ ॥

बन को कुञ्ज अति लगत सुहाई। फूलन फरन फरीं द्रुम बेली झूमि झूमि अवनी झुकि आई ॥ मिहिं मिहिं धार छुटैं जलजंत्रनि झरि हैं जस झरननि चहुँघाई। गुञ्जत मधु बन सकल सुवासित आनँदभरे मोर कुहकाई ॥ लटकत डोलत दियें भुज अंसन देखि देखि बन घन हरषाई। करत केलि कल ओट द्रुमन की चितवत सुन्दर मुख मुसिकाई ॥ पुलकि पुलकि हँसि हँसि उर लागत मैन सैन अँग अङ्गनि छाई। निरषत सघन लतन अलि लागीं अलबेली अलि रूप लुभाई ॥ १७३ ॥

चौसर नहर बहत फूलन मे बैठे मध दोऊ पिय प्यारी। चहुँ दिस कनक कटहरा राजत ता पर झालरि जरकसि डारी ॥ झरनि झरी आवत जल सीतल जलजंत्रनि छूटन छबि न्यारी। झूमी डारि झरि हैं जल मानों भादों की बरषत बरषा री ॥ गुञ्जत अलि कुल कमलनि डोलत बो-

लत पिक शुक मोर मचारी। लियें बीन गावैं अलि ठाढ़ी मधुर सुरनि ताननि रुचिकारी॥ ललित लाल लोचन रँग राते माते मद नव रूप खुमारी। चितै रहैं हँसि हँसि अलबेली प्रेम के पेच परे दृग चारी॥ १७४॥

आजु अति राजत हौज किनारें। पग लटकायें कंचन कुरसी बैठे दोउ भुज अंसनि डारें॥ भूषन बसन विविध पहिरें तन निरखत जल जंत्रनि की धारें। झूलि रहीं जल मैं द्रुम बेली फूलनि फल अति डारि सुधारें॥ जगमग रहे नूपुर खुलि चरननि लावन तर झुकि सखी सँवारें। कोउ ठाढ़ी सिर चँवर ढुरावत निरषत मुख दृग पलकनि पारें॥ कोउ बीरी खवावत सुंदर मुख कोउ गुहि गर पहिरावत हारें। अलबेली अलि पान भरे मुख निरषि निरषि आपन पौ वारें॥ १७५॥

करत कलोल हौज जल ठाढ़े लपट रहे ह्वै इक तन मन में। झूमि रहीं सिर पर द्रुमडारी झरत बारि जंत्रनि धारिन में॥ पहिरैं नीलंबर की धोती भींजि लगी गोरे अंगन में। छूटि रही आभा अँग अँग की आनप दुति फैली मनु बन में॥ पान भरे मुख कमल से विगसैं करत हास चितवनि नैनन में। अलबेली अलि संग सहेली निरषैं खरी समातिँ न तन में॥ १७६॥

भरे मौज दोउ हौज में भींजें साँधे जल जंत्रनि झरिलाईं। मानौं रूप कँवल से फूले पान भरे अति मुख मुसक्याईं॥ फूलन फलनि फलीं द्रुमबेली झूमि झूमि जल मैं झुकि आईं। गहे डारि ठाढ़े दोउ सुन्दर संग सखी नव रूप

सुभाई ॥ भींजि अलक लगि रहीं कपोलन बिथुरी लट मुख ऊपरि छाई। विकसत दुरत मनौं घन में ससि दोउ कर सों निरुवारत जाई ॥ सोभा कौ सिर छत्र बिराजैं तापर परि जलधार सुहाई। पूंछन मिस जल मुख पिय परसत हँसि हँसि करत केलि मनभाई ॥ लपटि रहे झीने पट भीने अँग अँग की अति दुति झलकाई। अलबेली अलि नैंननि सींचत आनँद की बरषा बरषाई ॥ १७७ ॥

करत सुमौज हौज में ठाढ़े भींजत जल जंत्रनि की धारिनि। अंसनि भुज जोरें दोउ सुन्दर नवल लाल नव कुंज बिहारिनि ॥ खसि खसि परै पट कुंवरि सीस तें बिथुरे बार जब लगत सुधारनि। ललित लाल लोचन ललचौहैं निरषत गहि द्रुमननि की डारनि ॥ करि करि ओट सखिन तन अंचल परसत पिय कपोल उर हारनि। वारत मन हटकन झटकन लखि अलबेली अलि नेह निहारनि ॥ १७८ ॥

खरे हौज में द्वै गरबांहीं। अति रसमत्त मगन मन भींजत जल जंत्रनि की धारनि माहीं ॥ राजत संग सषीगन सुन्दर भीजे पट तन दुति झलकाहीं। फूले नवल कँवल मुख मानौं हँसि हँसि कौतुक केलि कराहीं ॥ लै चुबुकी निकसे भरि सुबकी मुख सों बार निवारत जाहीं। दुरि दुरि निकसि मनौं बदरनि तें नवल रूप के ससि दरषाहीं ॥ छुवत कपोलनि अलक सुधारत करत मौज मनसिज सरसाहीं। अलबेली अलि हँसि कर पेलत रीझि रीझि पिय अंक भराहीं ॥ १७९ ॥

रुनकि झुनकि अति झूमत घूमत आवत दोउ जमु-

ना के तीरें। छकनि छके मानों मद पीयें धरत अवनि डग मग पग धीरें ॥ ठठकत गहि गहि डारि द्रुमनि की हँसि हँसि अंस उभय भुज भीरें। ललिता ललित बीन लै ठाढ़ी गावत अलबेली अलि नीरें ॥ १८० ॥

देखि सखी नव लाल रँगीले नीर तीर जमुना के आवैं। झूलि रहीं फूलीं द्रुम बेलीं फूल फूल पिय प्रियहि दिखावैं ॥ कबहुंक ठाढ़े ह्वै गहि डारिन नवल कपोलनि सँग मिलि गावैं। अलबेली अलि प्रेम मुदित मन रँग भरे दम्पति रीझ रिझावैं ॥ १८१ ॥

विहरत नावन चढ़ि दोउ प्रियतम देखत बन छबि तीरें तीरें। नावनि रचना रची मनोहर निरखि करत अति नैन अधीरें॥ द्वादस द्वारि बनो कंचन की तापर बँगला जज्यो सु हीरें झालरि जरी लसत मरगोलें हलित ललित अति परस समीरें ॥ तापर बैठे रूप उंज्यारे गौर स्याम अंसनि भुज भीरें। ठाढ़ी अलि नव नागरि सुन्दरि खेवनि आवत धीरें धीरें ॥ रतन जरी गुमटी कुंजन की झलकि रही आभा अति नीरें। लियें चँवर इक गावत ठाढ़ी अलबेली अलि नेह गँभीरें ॥ १८२ ॥

नावनि चढ़ि जमुना के तीरें देखत आवत बन छबि आछें। और नवारनि पर चढ़ि सजनी संग लगायें पाछें पाछें ॥ रतन जरीं गुमटी कुञ्जनि की फूल फूल द्रुम बेली झूलीं। झलकि रही आभा अति जल मैं मनु रविजा सब फूलनि फूलीं ॥ तैसियै नावनि की अति शोभा कञ्चन मनिमय भवन बिराजैं। जगमग रहिं गुमटी हीरन की चहोंओर

अतिछो छबि छाजैं ॥ तापर राजत हैं दोउ सुन्दर पान भरे मुख चन्द से झलकैं। पहिरें अँग अँग जरकसि बागे अनुरागे दृग परत न पलकैं ॥ रंग भरीं राजत संग सजनी गावत मधुर तान रस बाढ़ी। ताल मृदंग कोउ बीन बजावै कोउ सिर चँवर दुरावत ठाढ़ी ॥ ललिता बातन हँसत हँसावत रचि रचि सौंधे पान खवावैं । अलबेलीअलि नागरि सुन्दरि रीझ माल गर की पहिरावैं ॥ १८३ ॥

विहरत जमुना जल चढ़ि नावनि । जगमग रचि जल मैं छबि झलकनि नावनि रचना रुचिर बनावनि ॥ बरन बरन फूलनि जालो के रचे भवन सौरभ महकावनि। परिमल लुब्ध गुंजत अलि डोलें मधुर मधुर धुनि लगत सोहावनि ॥ फुलकारी सारी तन पहिरें फूलमाल अति उर रुरिकावनि। तैसेइ साजि सिंगार सषी संग खेवत हैं नावनि मन भावनि ॥ हँसत लसत मुख कमल से विगसे कोटि काम कल चन्द्र लजावनि अलबेली अलि बीन लियें ढिग मधुर मधुर ताननि की गावनि ॥ १८४ ॥

अथ संध्या को आगम। राग गौरी ॥

सांझ समय बनतें बनि आवें। बनो सरस बनमाल हियें मैं चलत ललित छबि पावैं ॥ भूषन जुत भूषित भुज अंसन कछु कछु मुख मुसक्यावैं । पीक भरे गँडन लगि गावत गौरी राग जमावैं ॥ लटकि चलत डग मग पग सुन्दर दम्पति रीझ रिझावैं। अलबेली अलि संग सषी गन निरषि निरषि बलि जावैं ॥ १८५ ॥

लटकत आवत बाहाँ जोरी। फूले फूले दोउ जन सु-

न्दर देखत बन घन खोरी॥ फूलन की माला उर पहिरें नवल स्याम नव गोरी। अलबेली अलि प्रानरवन दिन अबिचल भूतल जोरी ॥ १८६ ॥

आज बनी बन की अति शोभा। पत्र प्रसून रहे जगमग नव मनु मनसिज की गोभा॥ सांझ समे की पऊप उँज्यारी परस सरस दुति ओभा। अलबेली अलि निरषि निकाई पिय प्यारी मन लोभा ॥ १८७ ॥

देखि सखी अति सुन्दर सोभा फूली सांझ परी मुख आभा मानो फूली रूप की गोभा ॥ भूषन बसन बने तन झीने दीपति अँग अँग ओभा। अलबेली अलि निरखि रूप अति कोटि मदन मन लोभा ॥ १८८ ॥

आजु कुंवरि को रूप निदान। फूली सांझ ललित अरु नाई परी दर्शनि में आन॥ छूटि रही आभा अंगनि की कछु कछु मुख मुसक्यान। अलबेली अलि रूप छको छबि निरखि देत मुख पान॥ १८९ ॥

सांझ समय फूलन कुञ्जन में राजत दोउ पिय प्यारी। रँग रँग के फूलन की रचना चित्र विचित्र संवारी॥ बीच बीच जारी फूलन की राजत द्वादसद्वारी। ता ऊपर बँगला फूलन को चौसर कोर किनारी॥ रचो रुचिर सरगोल जरी की झालरि लरि जरतारी। जगमग रहे रूप के मंदिर आतप ओप उँज्यारी॥ फूलन के आले जाली के बरन बरन क्रतकारी। फूलन की कंगनी चहुंकोरें रची चतुर सहचारी॥ फूलन के मरवे कल कळसे गुमटी गोल सुधारी। तापर खिरकी खुली मनोहर जगमग रही अति भारी॥ फू-

लन के परदे अति नीके बँधे द्वारि अनुसारी। तैसीयै फूल० पौरनि परि झूलि रही द्रुमडारी ॥ वरन वरन के पंछी बैठे तिन पर मोर महारी। डोलत सरस सुगन्धन छाके भधुप करत गुञ्जारी ॥ बैठे फूल सिंहासन फूले प्रीतम रूप उँज्यारी। राजत सङ्ग सखीगन सुन्दर मनु फूली फुलवारी ॥ एक लियैं कर बीन बजावत गावत मधुर महारी। इक ठाढ़ी सिर चँवर ढुरावत नैननि रूप निहारी ॥ करत हास परिहास मुदित मन अँग अँग मैन खुमारी ॥ अलबेली अलि मीन कलोलैं रूप समुद्र अपारी ॥ १९० ॥

फूलन मन्दिर में दोउ राजैं। फूल से फूल रहे अँग सुन्दर मैनफूल उर साजैं ॥ फुलकारी सारी तन पहिरें भूषन फूल बिराजैं। अलबेलीअलि अंग निकाई निरखि मैन सत लाजैं ॥ १९१ ॥

राजत फूलन मन्दिर माहीं। डहडहे वदन कमल से फूले चितै चितै मुसिक्याहीं ॥ भूषन बसन लसैं फूलन के फूले उर न समाहीं। अलबेली अलि करत कलोलैं दियें भुजा गरबाहीं ॥ १९२ ॥

आजु सखी नव कुञ्जभवन में राजत रंगभरे री। सांझ समय की विरियां नीकी अँग अँग ओप धरे री ॥ चितै रहत हँसि हँसि सुंदर मुख रंग अनंग ढरे री। अलबेली अलि रंग रूप दोउ प्रेम प्रवाह परे री ॥ १९३ ॥

राजत कुञ्जभवन अति नीके। सांझसी फूलि रही नैननि मैं राते प्रेम अमीके ॥ चितै चितै हँसि हँसि गर लागत पेच परे मनो ही के। अलबेली अलि लखि रजनीमुख बढ़े

मनोरथ जी के ॥ १९४ ॥

साँझ समय बन कुञ्जन बैठे संध्याभोग सखी लै आई। राजत रुचिर सिंहासन दम्पति सुन्दर अति सुखदाई॥ पिस्ता दाख चिरौंजी खोया छुआरे अरु बादाम रलाई। थारी भरि राखी लै आगें मिश्री मेलि मलाई॥ खुरमा खाजा गुंझा लाडू तप्त जलेबी ल्याई। मोहनभोग मधुर कोमल अति लुचई रुचिर बनाई॥ मगद अमिरती बरफी फेनी बहु पकवान मिठाई। जेंवत मिले भावते जीके नैननि की निधि माई॥ कबहुं कौर लै मुख लौं परसैं चितै चितै रहि जाई। चतुर सखी कहि कहि रसबतियन खवावत चौंप दिवाई॥ हँसि मुसक्याइ रहे जब जानी सीतल जल अँचुवाई। रचि रचि पान देत मुख बीरी अलबेली बलि जाई॥ १९५॥

साँझ समै मिलि आरति कीजै। कुंवरि रूप नैननि भरि पीजै॥ सुन्दरि कंचन थारि सँवारे। घृत हित पूरि दीप कुल वारे॥ बैठो रतन सिँहासन राजै। सुन्दरि सिर छबि छत्र विराजै॥ झालरि ताल मृदङ्ग बजावें। मधुर मधुर सुर राग सुनावें॥ नूपुर पद गति सुरनि मिलावें। ताल भेद गुन गननि दिखावें॥ दुलरावें सखि अति रस बाढ़ी। दुहूँ दिसि चँवर ढुरावत ठाढ़ी॥ प्रेम मगन पहुपन बरषावें। जय जय सुन्दर शब्द सुनावें। अंग अँग भूषन मनिगन जोती। फैलि रही रुव बन घन दोती। सब सखियन मिलि आरति गाई। अलबेली अलि बलि बलि जाई॥ १९६॥

लागत सरस सुहाई रैन। उग्यौ सकल कला पूरन ससि बढ्यौ मनोरथ मैन॥ सजि सिंगार चारु अँग अंगनि

भरे प्रेम अनुराग । लटकि चले देखत बन को छवि मनि मंडल गरलाग ॥ जगमग रचि अति बादलो सारी किरन किनारो कोर। छूटी छटा लगी ससि मंडल उदित होति चहुँ ओर ॥ अरुन अधर मुरलो रस जुरलो गौरी राग अलाप । किंकिनि बलय मिलो नूपुर धुनि परत पगन को थाप ॥ आई उमगि उमगि ब्रजगोरी जोरि मण्डली वृन्द। अलबेली गुन कला दिखावैं नवल रूप के चन्द ॥ १९७ ॥

आयौ शरद विमल उड़राज। आयौ जानि सनेह सनेही मनो मैन सजि साज॥ परसि सरस किरननि मनि मंडल जगमग जोति छटान। मनों तनाव खची अवनी वर छायो बितन बितान॥ त्रिविधि समीर मल्लिका मुकुलित केतकी चम्प विकास। मानों हरषी सब बन बेली भई अति जौन्ह उजास॥ निरतत सरस सुघँग अँग सुन्दर पिय प्यारी इक साथ। कंचन बेलि बनीं बनितागन गहैं हाथ सों हाथ॥ बाजत मिली मधुर मुरली धुनि बाजे बिबिध अनेक। तान बँधान गुननि दिखरावैं सरस एक तें एक ॥ मुकुट की लटक चटक पीतांबर नीलंबर फहरात। सुन्दर नील सघन घन उनयौ दामिनि दुति दुरि जात ॥ थेइ थेइ कहत भरे मुख पाननि देत पगन गन थाप। सरस उकत नूपुर सुर सूचत गौरी राग अलाप॥ अंचल उभय सीस पर डारे गंड गंड भुज जोरि। पग डगमगत चलत मणि मण्डल चितवनि नैननि कोरि ॥ परसत पिय अंगनि रस सरसत बेपथ जुत अति गात। अलबेली अलि निरखि निरखि सुख तृण तोरत बलि जात॥ १९८ ॥

बहु देखो बाजो मुरली धुनि। वेपथ अँग बन बन जुबती जन उमगि चलीं आतुर श्रवननि सुनि ॥ परसि सरसि पूरन ससि मण्डलि छूटी छटा उदित दुति मनिगनि। सकल कलाकल सुघर रूप गुन खेलत रास रसिक चूड़ामनि ॥ थेइ थेइ बचन मधुर मृदु बोलन मोहत बरबस सब अलिगन मन। नील पीत अंचल चंचल अति दुरति मनौ दामिनि नौतन घन ॥ ताल मृदंग उपंग चंग कल किंकिनि कंकन की अति झलकनि। बाजे सरस मिले सुर सबहीं गावत आननि लगि दोऊ जनि ॥ अंसनि विवि भुज कसत हँसत अति जात समात मनो तन में तन। अलबेली अलि निरखि निरखि सुख तृण तोरत वारत तन मन धन ॥ १८९ ॥

अथ छन्द चाली ॥

बने नवल पिय प्यारी। सरद रैन उँजियारी ॥ सरद रैन सुख दैन मैन मय जमुना तीर सुहायौ। सकल कला पूरन ससि सीतल मणि मंडल परि आयौ ॥ अतिसय सरस सुगन्ध मन्द गति बहत पवन रुचिकारी। नव नव रूप नवल नव जोबन बने नवल पिय प्यारी ॥ १ ॥ मुरली धुनि बन बाजै। मनो मैन दल साजै ॥ मनो मैन दल साज अंग अँग नौसत सरस बनायें। उमगि चलीं अलि कुल सरितासी श्रवननि सुन सुचुपायें ॥ जार करन चहुंओर खरीं मिलि मंडलि अति छवि छाजै। कर कंकन किंकिनि पग नूपुर मुरली धुनि बन बाजै ॥ २ ॥ खेलत रास रसीले। दंपति छैल छबीले ॥ दंपति रंग रँगी सँग सजनी मणि मंडल पर डोलैं। बीच बीच नव नागरि सुंदरि तत्था थेइ थेइ बोलैं ॥ भूषन

बसन बने अँग अंगनि फहरत पट चटकीले । करत विलास हास रस बरखत खेलत रास रसीले ॥३॥ नृत्तत नवल नवेली। पिय अंसनि भुज मेली ॥ पिय अंसनि झुकि चलत मन्द गति लेत सुलप सुखदाई । कुंतल हलनि चलनि कल कुण्डल जुग गंडनि छबि छाई ॥ अधरनि डुलनि झुलनि नक मोती मनो करत रसकेली। चंचल चौंप चपल चपलासी नृत्तत नवल नवेली ॥ ४ ॥ लिये बीन कल गावैं । पिय मोहनहिं रिझावैं ॥ पिय मोहन दच्छिन दिसि सजनी बाम भाग कर जोरैं । ठुमकि चलनि डोलनि पद गति की तानुन माननि तोरैं ॥ ग्रीवा ढुरनि मुरनि कल कटि की भृकुटी नैन नचावैं । सुंदरि सरस सुघर पिक बैनी लिये बीन कल गावैं ॥ ५ ॥ गौरी राग जमायौ । सब बन घन मैं छायौ ॥ सब बन घन पूरित अति आनँद मोहीं सकल सहेली। उडपति थकित चकित उड़ मंडलि प्रेम विवस द्रुम बेली ॥ पद पटकत लटकत अँग अँग प्रिय रति पति प्रगट नचायौ ॥ गावत सन्मुख स्याम मनोहर गौरी राग जमायौ ॥ ६ ॥ भई निसा रसरंगी। प्रेम विवस सखि संगी ॥ भयो प्रेम अति उदित चहूँदिसि नाहिन रह्यो सँभारा। रीझि रीझि झटकत पट प्रीतम छुअत उरज उरहारा ॥ नेति नेति बर बोल लोल दृग भई प्रीति अति चंगी। अलबेली अलि बलि बलि सुख लखि भई निसा रसरंगी ॥ ७ ॥ २०० ॥

सखी आज़ कौ नीकौ रास बन्यौ । छूटीं छटा मनिन मंडल ससि मानौ बितन बितान तन्यौ ॥ लेत सुलप नवला चपलासी गावति अलि रस राग सन्यो। अलबेली अलि जो

सुख बरखो सो इहि मुख क्यों जात भन्यौ ॥ २०१ ॥

राग कल्यान ॥

बैठे बन ठन रास मँडलि में नवल किशोर किशोरी। गौर स्याम घन दामिनि की दुति बनी नवल नव जोरी ॥ पिय कटि तास काछनी काछें नीलंबर तन गोरी। इक तें एक सखी अति सुन्दरि नवल प्रेम रँग बोरी। नृत्तति सरस सुधंग अंग अति चलत चपल चित चोरी। गावत आवत लेत सुलप गति तान तरंग झकोरी ॥ थेइ थेइ बोलत डोलत रंग भरे चितवत चन्द चकोरी। अलबेली अलि मिलि रस बरखत बँधी प्रेम की डोरी ॥ २०२ ॥

बजत मृदंग रास मण्डल में नृत्तत दोउ पिय प्यारी। सरस सुधँग अति लेत सुलप गति सुन्दर रूप उँज्यारी ॥ छूटि रही छवि जोन्ह अंग अँग पहिरें जरकसि सारी। जग मग रहि मुखचन्द किरन कल चौसर कोर किनारी ॥ सरस तान कल्यान रागिनी धुरी समय अनुसारी। सुँदर सुघर कल गावत आवत पिय अंसनि भुज धारी। लटकि लटकि गति लेत नागरी अंग अंग सुकुँवारी। अलबेली अलि रीझि रीझि पिय करत प्रान बलिहारी ॥ २०३ ॥

नीकी लगत अति निसि उँजियारी। जमुना तीर भीर युवतिन की मध्य बने पिय प्यारी ॥ थेइ थेइ बचन मधुर मृदु बोलत डोलत अति सुकुंवारी। अलबेली अलि चितै रहत पिय नैननि रूप खुमारी ॥ २०४ ॥

देखि सखि आजु दोउ रास मण्डल खरे। जगमगत चारु अंचल उभय सीस परि लेत गति तान सुख पान रंग-

नि भरे ॥ ठुमकि पग धरत डग भरत गज गामिनी कामिनी कामि अँग अङ्ग चञ्चल करे। लेत गति सुलप ढलमलत मन चलत जब कोटि शत चन्दगति मन्द पायन परे॥ ग्रीव की डुलनि में हलनि कल कुंतलनि नासिका मुक्त अधरनि अरुन थरहरे। देति पग थाप आलाप सुर सौं सुघर परम सुन्दर सरस राग रागिनि ढरे। चिबुक बर चारु अँगुनी धरे हँसत अति प्रेम बिह्वल अलिन नैन मन गन हरे। करत अलबेलि घायल कटाक्षनि सरस परी अति भीर दृग बीर नाहिन टरे॥ २०५॥

आजु नव नागरी रास मण्डल रचत। कोटि कल कामिनो प्रेम उमड़ो घटा रूप बर दामिनी बीच सुन्दरि नचत॥ चरन डग मग धरत धरनि रस बिस्तरत देत करतारि थेइ थेइ मुख सुख सचत। लेत गति उरप बहु भेद भायन सुलप भूषनन किंकिनी क्षुद्र कटी तट लचन॥ पूरि रह्यो शब्द गुंजार धुनि नूपुरन मोर कङ्कात मनु कूक मन्मथ नचत। ओढ़िनो चारु जरितारि खुलि रही उर जगमगत हार चौकी कनक मनि रचत॥ मन्द मुसक्यान थहरान मुक्ता अधर करत रस बिवस पिय नैन नाहिन बचत॥ भ्रमत मन मधुप अलबेलि अलि नैन तहँ बिमल पद कमल मकरन्द निस दिन जचत॥ २०६॥

गावनीं मधुर सुर रास मण्डल खरी। लियें कर बीन सब गुननि परवीन अति लेन गति तान उनुमान भायन भरी॥ मन्द मुस्किान थहरान मुक्ता अधर भयौ मुख पान लागत मनो रस झरी। ग्रीव कल डोल दृग लोल कुंतल हल-

नि चलनि कुंडल चपल मैन गति सति हरी ॥ देत पग थाप आलाप सुर नूपुरनि परम सुन्दर सुघर राग रागिनि ढरी। करत रस विवस अलबेलि अलि नैन तहँ अङ्ग अँग कांति रस प्रेम उमड़नि परी ॥ २०७ ॥

राग पंचम।

आजु की रैन सखि फूलि रहि फूल सी श्रवत अति सरस रस ससि जुन्हाई। परम पावन पुलिन बहत सीतल पवन मदन मद दवन बन महक छाई ॥ षष्ट दस दल कँवल मनिन मंडल बिमल रच्यो रस रास पिय प्रान प्यारी। सङ्ग सत कामिनी दामिनी सी दिपैं भामिनी बीच गुन रूप भारी ॥ करनि कर जोर चहुँओर भुज मंडली एक तें एक नव तरुन गोरी तत्त थेइ थेइ करैं चरन डग मग धरें प्रेम रस पुलकि अँग अँगन थोरी ॥ कुंतलनि हलनि जुग गंड मंडित कुटिल श्रवन कल कुंडलनि दुति सुहाई। नासिका मुक्त थरहरनि धर बिंब पर भिलमिलत पीक की अरुनमाई ॥ सीस पर फरहरनि नील पीतम्बरनि उदित मनु दामिनी दोति घन में। भयो मुख पान हँसि गाढ़ गंडनि परत जगमगत रूप की कांति तन में ॥ ताल मिरदंग मुखचंग बीना मुरज तान बंधान गुन गन दिखावैं पगनि की थाप आलाप सुर नूपुरनि नैन कोरन सों रतिपति नचावैं ॥ थकित उडपति सुगति चकित उड़ मंडली प्रेम विह्वल सखी जन निहारें। बढ्यौ रससिंधु को वृन्द बरनत सु क्यों निरखि अलबेलि अलि प्रान वारें ॥ २०८ ॥

देखि सखि आजु बनराज दोउ लाडिले रास मण्डलि

खरे मदन छाके । भुजनि अंसनि दियें प्रेम मादिक पियें निरखि तन क्रांति ससि हूर थाके ॥ मुरलि अधरनि धरें स्याम अभिराम गति राग पंचम सरस सुर जमायौ । सोई भरि तान उनमान गुन गान सों प्रगट सुंदर सुघर करि दिखायौ ॥ अंचलनि झपट मैं जात झपट्यौ जु मन तड़ित घन नील की छवि छिपाई । पगनि की रखनि मैं सुभग नूपुर सुधनि मोर कहोकात मनु मैन माई ॥ बढ्यौ रस अैन सुख दैन सब रैन जन देत नहिं चैन पिय नैन गोरी प्रेम विह्वल निपट निरखि अलबेलि अलि वारहैं प्रान सब तिरन तोरी ॥ २०९ ॥

बने दोउ रसिक रस रासमंडल सरस सरद की रैन सुख दैन माई । परम पावन पुलिन सरस कुञ्जस्थलनि मदन मद दवनि ससि जौन्ह छाई ॥ बनी अति चारु जरतारि सारीसु भगकिरन चौकोर मुख लहलहाई भाइ भायन उरप लेत सुन्दर सुलप बढत रतिरङ्ग अँग अँग निकाई ॥ नीलपट पीत फहरात अङ्गनि मिथुन तड़ित घन नील उद्दोतिताई । लेत ओघर सुघर ताल गति तान की जगमगत पीक मुख अरु नुमाई ॥ ताल मिरदङ्ग लियें संग सजनी खरीं मुरलि मोहन मधुर सुर बजाई । ठंच पग थाप आलाप सुर रँग भरीं भूषननि अङ्ग क्रनकनि मिलाई ॥ अलक अंगुष्ट तरजनि गहे पलटि पग जात मुसक्यात सुंदर सुहाई । परी रसभीर दृग धीर नाहिन धरें निरखि अलवेलिअलि छबि छराई ॥२१०

देखि री देखि सखि आजु रजनी बनी छिटकि रहि जौन्ह रस ससि उँज्यारी । हंसजा तीर अति भीर नव

सुंदरिन मध्य नृतत्त दोउ पीय प्यारी। फरहरत सीस सारी सुमग्र तास को जगमगत किरन चौसर किनारी। ठुमकि पग धरत दल मलत मन नैन गन चलत लै सुघर गति सुलप भारी॥ छुटीं जुग अलक रहिं झलक अति मंडननि डसत मन गन मनो नागि कारी। पलटि पग जाति मुसिक्याति मुख सुन्दरी भरी अति रूप नैननि खुमारी। लियें कर बीन परवीन सँग सहचरी लेत गति तान कर देत तारी॥ रहीं अति चाइ मुरझाइ सब चित्र सी खरी अलबेलि अलि सुधि बिसारी॥ २११॥

देखि सखि आजु बाजत मधुर मुरलिका रास मंडल रच्यो जमुन तीरें। चली अति उमगि नव सुन्दरी श्रवन सुनि एक ते एक वर भुजन भीरें॥ करन कर जोर चहुं ओर ठाढ़ी सबै प्रेम के रंग अँग अङ्ग राते। मध्य भुज अंस दै खरे ललना लल्न छके नव रूप मद मदन माते॥ लिये गति सुलप को चलत सुन्दरि सुघर नूपुरनि किंकिनी सुर मिलायें। भयो मुख पान गावत अली संग लै रीझि रहि जान पिय सिर डुलायें॥ ताल मिरदङ्ग लिये बीन पाछें खरी लेत गति तान बढ़ि बढ़ि किशोरी। देहिं पग थाप सुर तोरहें ताल गति एक ते एक नव तरुनि गोरी॥ तत्तथेइ थेइ थेई कहत बिच बिच अली चलो सँग जाति मुख हसि निहारें। रहे दृग छाकि पल थाकि अलबेलि अलि खरी रस बिवस सब प्रान वारें॥ २१२॥

राग केदारा।

निरतत रास में दोउ प्यारी प्यारो। सुभग सुछन्द ता-

न बन्धाननि गावत सरस राग केदारौ ॥ लटकि लटकि मुरि मुरि अँग सुंदरि लेत सुलप गुन गन बिस्तारौ। पद पटकनि थेइ थेइ मुख बोलन मोहे खग म्रग अलि गन सारौ ॥ हँसि हँसि कमति सुद्दढ़ भुज मूलनि दुपटा श्वेत उभय सिर धारौ। छिगुनी चारु चिबुक कल दीनें पिय मन मीन कूप रस डारौ ॥ देत थाप नूपुर सुर सूचत आनँद मोद बढ्यो अति भारौ। अलबेली अलि प्रेम सुधा रस उमड़ि चल्यो नहिँ जात सँभारौ ॥ २१३ ॥

रँग भयो लाल मधुर सुर गावें। सरस उकत गति तान तरंगनि प्रान प्रिया मनमोद बढ़ावै ॥ राधा नाम नवल नामावलि रटत मधुर मुख बेनु बजावै। देत थाप नूपुर सुर सूचत लटकि लटकि गुन गननि दिखावै ॥ प्रेम पुलक झलकत अँग अंगनि रहसि रहसि हँसि सुख उपजावै। अलबेली अलि रसिक शिरोमनि रीझि रीझि पिय कंठ लगावै ॥ २१४ ॥

राग काफी।

प्यारी जू तें मैं मोललियौ। दरस दिखायौ सुख उपजायौ नैननि कौं जियदान दियौ ॥ रूप निधानानँद निधि स्यामा अंग अंग सुरंग भियौ। अलबेली अलि की सुख स्वामिनि तेरौ ज्यायौ जियौ ॥ २१५ ॥

राग केदारौ ॥

नृत्तत दियें दोऊ भुज मूलनि। सुभग पुलिन निस सरद उँज्यारी रच्यो रास कालिन्दी कूलनि ॥ अति अनुराग भरे बिवलोचन कहा कहूँ अँग अँग की फूलनि। लेत सुलपि

गति अति गजगामिनि निरखत चंद मंदगति भूलनि ॥ कच कुच चारु हार पिय परसत मेटत मनसिज की अति स्हल-नि। अलबेली अलि झटकि करनि कर ढांपति हँसि मुख उरज दुकूलनि ॥ २१६ ॥

खेलत रास रसिक पिय प्यारी । सुभग पुलिन जमुना तट सुन्दर सरद चन्द उँजियारी ॥ ताल मृदङ्ग लिये रँग सजनी चहुँ दिसि मंडलि जोरें । बाजत मधुर मिले सुर मुरली भूषन धुनि अति थोरें॥ लिये सुलप चंचल चपलासी चलति मन्द गति गोरी । आवत गावत झुकि अंसनि पिय चितवत चन्द चकोरी ॥ गहें अलक जुग अँगुरिन मुसकति जात पलटि सुखदाई । ओढ़िनि श्वेत जरी खुलि रहि उर जगमग जोति सुहाई ॥ लिये लाल अंचल झकझोरत सुन्दर बदन निहारें । अलबेली अलि वलि बलि छबि पर निरखि अपनपौ वारें ॥ २१७ ॥

खेलत रास रसिकनी भामिनि । सरस सुधँग अति अँग २ सुन्दरि लेत सुलप अभिरामिनि ॥ तान बँधान स-कल गुन आगरि रूप अनूपम कामिनि। श्री वृन्दाबन रस बरषत दिन अलबेली अलि स्वामिनि ॥ २१८ ॥

राग कान्हरौ।

खेलत रास में प्यारी प्यारौ । लिये छरी कर खरी भरी रँग निरतत पिय नव रूप उंज्यारौ ॥ लेत सुलप गति ताल तान अति रहसि रहसि गुन गन बिस्तारौ। जान बूझि जहँ जात ताल चुकि पगनि थाप दै कुँवरि सँभरौ ॥ गावत बीन प्रवीन लियें कर तान बँधान राग सुर सारौ। अलबेलीअलि

सीस डुलावत रीझि रीझि आपनपौ वारौ ॥ २१६ ॥

आजु बने दोउ रास मैं नीके। झलकि रही सोभा अँग अँग की पहरैं बागे स्वेत जरी के ॥ तैसियै सरद रैन उँजियारी दिपति चन्द मुख रूप अनी के। नृत्तत सरस सुधंग सुघर दोउ आनँद मोद बढ़ावत ही के ॥ गावत आवत दै भुज अंसनि भरे पान मुख प्यारी पी के। खुलि रहे बार चारु उर अंचल चंचल अँग अँग नैन अनी के ॥ अरभि रहीं मालावलि सुंदर पेच परे कल कंठसिरी के। रहि न सँभार भरे रस रंगनि अलबेलीअलि जीवन जी के ॥ २२० ॥

खेलत अति रस रास भामिनी स्याम अंस दीनें भुज दंडनि। लहँगा लाल बादली सारी चौसर किरन जरी मुख मंडनि ॥ सोभित भाल खौर केसर की कुंतल हलनि डुलनि जुग गंडनि। पाननि रंग भर्यौ मुख रात्यौ अमल कमल कल दोति विहंडनि ॥ ठुमुकि ठुमुकि पग चलत सुलप लै कोटिक चंद मंद गति खंडनि। अलबेली अलि रँग भरी भामिनि बसत रहौ दिन नैन अखंडनि ॥ २२१ ॥

रच्यौ रास रसरँग भरि भामिनि। सीतल सरद चन्द उँजियारी अतिशय सरस सुहाई जामिनि ॥ सकल कला गुन रूप सुघर वर चलत सुलप लै गति अभिरामिनि। सरस सुछन्द तान बन्धाननि गावति आवति अति गज गामिनि ॥ लागति झपट उभय अञ्चल की निकसत दुरत मनो घन दामिनि। ताल मृदंग बीन वर बाजे साजें सङ्ग सखीकुल कामिनि ॥ चितै चारु उर वर पिय परसत झटकत कर सुन्दर रस धामिनि। अलबेली अलि परे प्रेम बस दम्पति हर

सुरति संग्रामिनि ॥ २२२ ॥

नीकें रास मँडलि में राजैं। गौर स्याम सोभा सुखसागर अँग अँग कोटि मदन दल साजैं॥ गंड गंड भुज दंडन जोरें पान भरे मुख चन्द विराजैं। दुपटा श्वेत जरी सिर डारें नृत्तत चन्द मंद गति लाजैं॥ गावति आवति संग सखी गन ताल मृदङ्ग बीन वर बाजैं। अलबेली अलि की सुख स्वामिनि करत विवस रसरङ्ग समाजैं॥ २२३ ॥

राग विहागरौ ॥

नीको लगत निसि सरद उँज्यारी। बंसीवट जमुना तट सुन्दर खेलत रास रसिक पिय प्यारी ॥ ताल मृदङ्ग बीन वर बाजैं मुरली मिली मधुर सुर भारी। तान बँधान राग सुर सूचत नूपुर कल किंकिनि झनकारी॥ झूमत मनि मंडल पर डोलत बोलत थेइ थेइ दै दै तारी। करत विलास हास रस बरखत अलबेली अलि लखि बलिहारी॥ २२४ ॥

नीकी लगत अति आजु की रजनी नीके नवल किशोर किशोरी। नीको नवल सखी सँग सुंदर एक तें एक सरस नव गोरी॥ नीकें निरतत रास मँडल दोऊ नीकें लेत सुलप थोरि थोरी। नीकें लटकि चलत लै गति अति आवत गावत दोउ भुज जोरी॥ नीकें कसत सुदृढ़ भुज मूलनि झटकत पट पिय हँसि कटि डोरी। नीको रस बरषत मिलि दम्पति अलबेली अलि बन घन खोरी॥ २२५ ॥

लटकत डोलत रास मँडल में पिय संग नवल किशोरी। थेइ थेइ कहनि मधुर मृदु बोलनि चन्द वदन नव गोरी। अलिकुल प्रेम घटा सी चहुंदिसि खरीं भुजनि भुज जोरी।

लेत सुलप अति ताल तान गति भूषन धुनि थोरि थोरी ॥ पान भरे मुख लसत स्रवन के चितवत चन्द चकोरी । अलबेली अलि रूप कमल से फूल रहे चहुँओरी ॥ २२६ ॥

आजु सखी नव नागरी नागर रच्यौ रास जमुना के तीरें । पूरन सरद चंद उँजियारी छायौ विपिन सुगंध समीरें ॥ जगमग रहि मणि मंडल अवनी छुटी किरन रँग रङ्गनि छोरें । अलिकुल कोटि कामिनी दामिनि इक तें एक भुजनि भुज भीरें ॥ सारँगि बीन प्रवीन बजावें मिलि सुर मधुर मृदङ्ग मजीरें । परस न होत निचोलन को कहुँ चलत सुलप की गति लै धीरें ॥ ठुमकि ठुमकि पग धरत मंद गति गावत अति गुन गन गंभीरें । अलबेली अलि संग देत सुर आवत अलिगन नीरें नीरें ॥ २२७ ॥

ए दोउ खेलत रास रसीले । छिटकि रही निस जौन्ह उंज्यारी पहिरें पट चटकीले ॥ राजत पिय सँग रँग भरि भामिनि घन दामिनि ज्यों सोहैं । आवत गावत झुकि पिय अंसनि कोटि मदन मन मोहैं ॥ देत थाप पग ठुमकति अवनी सींचत अँग निकाई । चलत सुलप गति लै चपलासी अङ्ग अङ्ग छवि छाई ॥ ताल मृदङ्ग उपङ्ग बीन वर मुरलि मधुर धुनि बाजै । सरस मिले सुर नूपुर किंकिनि कोटि मैन दल साजै ॥ श्रमजल कन भींजीं जुग अलकैं झलकें नवल कपोलैं । लोचन ललित लसत रंग राते पिय अञ्चल झकझोलैं ॥ पान भरे मुख चन्द से सोहत मोहत संग सहेली । अलबेली अलि वारत तन मन निरखि निरखि रस केली ॥ २२८ ॥

खेलत कुंवरि किशोरी रास। थेइ थेइ कहन चलन दृग अंचल मन्द मन्द मृदु हास ॥ पद पटकनि लटकनि कल कामिनि झटकत पिय वर वास। दुरवति करनि कुंवरि वर भामिनि रस बस होत विलास॥ गहि भुज मूल रसिक रस लम्पट धाइ धरो उरजास। नेति नेति बोलत अलबेली देत मदन मन त्रास ॥ २२९ ॥

राग सोरठ ॥

चलि सखि भावती छबि देखि। मंडल विमल कोटि कल कामिनि मद्धि कुंवरि वर बेखि ॥ मृगमद आड़ सु गाड कपोलनि चिबुक विन्दु वर सेखि। कुंडल कल ताटंक विराजत नैननि अञ्जन रेखि ॥ उघटत तान मान पद पटकत उछरत हार उरेखि। छिगुनी चारु चिबुक धरि मुसकत देत मदन अवपेखि ॥ कुसुम गलित विगलित लट अंसनि कछु कछु स्वास विसेखि। अलबेली अलि रूप लुभानी परत न नैन निमेखि ॥ २३० ॥

राजत रंग भरे दोउ लाल। मुसकत सुन्दर पान भरे मुख चितवन नैन विशाल॥ अधर अधर जोरें दोउ ठाढ़े दै अंसनि भुज माल। अलबेली अलि रूप बेलि सी लागी स्याम तमाल॥ २३१ ॥

नीकी लगत अति आजु की रैन । सकल कला पूरन ससि सीतल छायौ बन मनु मैन ॥ पहिरें पट चटकीले अंगनि उदित होति रस ऐन। करत हास परिहास मुदित मन विलसत अति सुख चैन ॥ प्रेम प्रवाह परे रसनागर बलित ललित कल बैन। बसो सदा अविचल यह जोरी अल-

बेली अलि नैन ॥ २३२ ॥

राग बिहागरौ।

नीकी लगत कछु आज की रात। दुलहिनि नवल किशोरी गोरी दूल्हौ सांवल गात ॥ पहिरें सरस सुहाने बागे अरुन कसूंभी रङ्ग। अङ्ग अङ्ग अतिशै दुति दीपत भींजे रङ्ग अनङ्ग ॥ सोभित सीस सेहरा पिय के मोतियन मौर समेत। गांठ जोरि अञ्चल प्यारी के ललिता भांवरि देत ॥ विविध भांति के सुसुम कुसुम लै निर्मित रुचिर वितान। अलबेली अलि मदन छके दोउ ठाढ़े जोरें पान ॥ १३३ ॥

ए दोउ ठाढ़े कुंज परछाहीं। दुपटा सुभग सीस पर डारें दियें भुजा गर बाहीं ॥ हँसि हँसि बीरी खात खवावत आनँद उर न समाहीं। अलबेली अलि रूप रँगीली राखति नैननि माहीं ॥ २३४ ॥

अथ सैन को समो ॥

लटकि चले मिलि सैन कुञ्ज कौं करत बात दोउ प्यारे। छाय रह्यौ आरस कछु अङ्गनि नैना नींद घुमारे ॥ रङ्ग अनङ्ग चढ़ी पानप दुति मुसकनि रूप उँज्यारे। अलबेली अलि स्वामिनि छबि पर कोटि काम कुल वारे ॥ २३५ ॥

बैठे कुञ्ज भवन दोउ प्यारे। अति अनुराग भरे बिवि लोचन नींदर घूंमि घुमारे ॥ पुलकित तनु आरस जुत प्यारी होत ललन उर हारे। अलबेली भरि भोजन थारी ल्याई रुचि अनुसारे ॥ २३६ ॥

कुञ्ज भवन बैठे पिय प्यारो। अवसर जानि सैन की सजनी ल्याई भोजन थारी ॥ गूंझा लाडू खाझा खुरमा राखे स-

रस सुधारी। घेवर बावर नम्र जलेबी भांवति अति सुकुंवारी॥ मोहनभोग मधुर कोमल अति लुचई रुचिर सँवारी। पेरा मगद सेव अति मीठे बहु मेवा ले धारी॥ पुरी कचोरी पापर पपरी लौनी अति रुचिकारी। दही बरे थोरे कछु कोरे धरे सखी हितकारी॥ पान मिलाय पनौरा कीनें साक फुलोरी न्यारी। नेबू आदो आंब मुरब्बा और बहुत तरकारी॥ अति अनुराग भरे मिलि जेंवत हँसि हँसि लेत गसारी। अति सै दुति दोरत अंग अँग की राजत मैन खुमारी॥ नींद भरे लोचन अति राते बिच बिच पल झपि जा री। कहि कहि बातन रुचि उपजावत प्रेम मुदित परिचारी॥ कबहुंक कौर देत मुख तिय के रचि रचि रसिक बिहारी। कबहुंक बीचहिं लिये रहत हँसि सुंदर बदन निहारी॥ खात खवावत अरस परस मिल सुख उपजावत भारी। छकनि छके छवि छैल छबीले जिनके दरस अहारी॥ सीतल जल अँचुवावत सजनी लिये कनक कर झारी। अलबेली अलि दे मुख बीरो रचि रचि लौंग सुपारी॥ २३७॥

जेंवत दोउ अनुराग भरेरी। रचि रचि कनक कटोरा सजनी भरि भरि सौंज धरेरी॥ हँसि हँसि लेत गसा मुख दोऊ कौतिक केलि करेरी चितै रहत कर कौर बीचहीं मनु दृग पेच परेरी॥ कबहुँक पल झपि जाति कुँवरि की नैना नींद घरेरी। नवनागर अति चतुर ललन पिय बतियन रंग ढरेरी॥ जल अचवन करि पान खात मुख हँसि हँसि चित्त हरें री। अलबेली अँग अँग रँग राते प्रेम प्रबाह परे री॥ २३८॥

दूध पिवत दोउ रसिक रसीले । ललिता लीन्हें कनक कटोरा घूंटि घूंटि मुख लेत छवीले ॥ झपि झपि जात पलक अरसौंहो राजत नैना नींद घुमीले । अलवेली अलि प्रेम पुलकि तन अङ्ग अङ्ग मद मदन रमीले ॥ २३९ ॥

राजत कुंज महल पिय प्यारी । प्रेम पुलक अतिशै दुति दीपत अँखियां नींद घुमारी ॥ आरस बस मुर लेत जँभाई पिय कंठन भुज डारी । अलबेली अलि साजि आरती ल्याई अलि हितकारी ॥ २४० ॥

आरति करें अलिकुंज सदन में । पीवत अनुपम रूप पुलक तन मोद विनोद समात न मन में ॥ कंचन थारि बारि दीपक कुल जगमग जोति होति आँगन में । अँग अँग दोति उदित भूषन पट छाइ रहे मनु भान भवन में ॥ घंटा ताल मृदङ्ग झालरी पग नूपुर धुनि होत रुरन में । अलबेली अलि न्यौछावर करि डालत तन मन प्रान दृगन में २४१ ॥

राग सोरठ ॥

पौढ़िये जी पौढ़िये हो लाल । लीजिये निज प्रान प्यारी सङ्ग सुन्दरि बाल ॥ घुरी आवत नींद अतिहीं नवल नैन विशाल । करऊ सेन बलिजाउँ भावति दै अँकनि भुजमाल ॥ पग सहराऊं नींद अनाऊं लोचन ललित रसाल । अलबेलो अलि नीकी जोरी कंचन बेलि तमाल ॥ २४२ ॥

स्यामा प्यारो कीजिये सुख सैन । अति अरसात जँभात अङ्ग अँग नींद घुमी कल नेंन ॥ दुग्ध फैन सम सज्जा सजनी रची रुचिर सुखदैन । आयौ चढ़ि उड़राज सु सीतल

भोंजी अति रस रैन ॥ विविध सुगन्धनि भरि भरि भाजन राखे ढिग रस ऐन। अलबेलीअलि दोउ चितये ऊगे अङ्कुर मैन ॥ २४३ ॥

अथ सिज्या को समों ॥

आए दोउ सेज पर सुख दान। सोंधो अंग सुधंग लावत खात हँसि हँसि पान ॥ ललित लोचन लाख सोहैं मनो मनसिज बान॥ अलबेली अलि करत घायल रहत तीखे तान ॥ २४४ ॥

राग कल्यान।

बैठो नव कुंज सुख सेज पर भामिनी। नींद बस अङ्ग अरिसाय रहे रस भरे झपक पल लगनि पिय अंस अभिरामिनी॥ रहे छुटि बार पट बन्ध उरजन खुले कोटि सत मैन अति मथित मद कामिनी। करत रस विवस अलबेलि अलि नैन पिय लागि अँग अंग रही रूप वर दामिनी॥२४५

नींद भरी अँखियां अरसानी। झपक पलक पिय अंसनि लागत अरुन डोरि सरसानी॥ मृदु पल्लव करि पेच डारि जुग भुज ऊँचे उझिकानी। अति अरसाति जँभाति कामिनी कंचुकि बँध तरकानी॥ नीलाम्बर पट मिही उरोजनि निरखि सखी ललचानी। अलबेली अलि पीवन रस मिस चतुरन कहत कहानी॥ २४६ ॥

कुञ्ज महल राजत बन रानी। सुभग सेज सौंधे अंग चरचें नैननि नींद घुरानी॥ पिय के अङ्क निसङ्क भई अति करत सेन रस सानी। कहत सखी अनुराग भरी तहँ अद्भुत केलि कहानी॥ अङ्ग कान्ति अतिशै दुति दीपनि

अँखियां रहत लुभानी । अलबेली अलि दोउ रस लोभी रजनी जात न जानी ॥ २४७ ॥

नींद भरे नैना अति सोहैं । कल कंजन रंजन मुख मानो मतुवारे अलि को हैं ॥ भुज जुग जोरि गरे पिय झूमत घूमत अँग अरसोंहैं । अलबेली अलि नैन चषक करि पीवत रस सरसोंहैं ॥ २४८ ॥

राग सोरठ।

राजैं माई रुचिर अति सुख धाम । बैठे सेज सुदेस सुन्दर नवल स्यामा स्याम ॥ ललित लोचन लाल सोहैं कई सेना काम । अलबेली अलि झपकि पल कल पौढ़ि गइ अभिराम ॥ २४९ ॥

पौढ़े दोउ सेज स्यामा स्याम । नीलम्बर अति मेहीं ओढ़ें झलकैं अँग अभिराम ॥ पिय भुज सीस उसीसा दीने आनँद विधि सुखधाम । अलबेली मनो दामिनि घन में दिपति नवेली बाम ॥ २५० ॥

पौढ़े दोउ सेज पर इक संग । अति उदिगार उठत सौधे की भींजे रंग अनंग ॥ नैना नींद भरे अति सोहैं आरस जुत अँग अङ्ग । अलबेली कल केलि कहानो कहत बढ़त रति रङ्ग ॥ २५१ ॥

राग विहागरौ।

रङ्ग महल छबि देखि सखी । लागि रही सुख सों प्रीतम तन रूप रासि मनु उरसि रखी ॥ चकित नैन अवलोकत अँग २ मानो कबहूं नाहिं लखी । अलबेली अलि कल्प विहाने करत रूप पिय नैन मखी ॥ २५२ ॥

रँग बरषत सखि रङ्ग महल में। पिय संग सेज विराजत सुन्दरि प्रेम पुलक तन लाड़ि गहल में॥ अङ्ग क्रान्ति अतिशय दुति दीपत चकचौंधत दृग रहत दहल में। अलबेली अलि मन मधुकर तहँ फिरत चपल अति चहल पहल में॥ २५३॥

फूल निकुंज शयन किशलय दल चरन पलोटत पिय सुखदाई। अंगुरि चटक तरवनि सहरावत छाइ नयन हिय लियें रहि जाई॥ मेटत रंग ललन करतल कौ झलकत दुति पग मंजु ललाई। फूल्यौ अंग समात न मन में भावनि टहल आजु की पाई॥ चितै कुँवरि हँसि अङ्क भरत पिय अधर अधर रहि जोरें माई। निरखत सखी झरोखनि लागी अलबेली अलि अंग निकाई॥ २५४॥

रंग भयौ लाल रसिक रस घूंटै। रङ्ग महल सुख सेज लड़ैती अधरनि नाहिन छूटै॥ अरस परस हटकनि झटकनि मैं तरक तनो उर टूटै। अलबेली अलि कौ सुख सरबस कंचन सो धन लूटै॥ २५५॥

सजनी रङ्गमहल छबिछाई। कुन्द मालती बेलि चमेली रचि रचि कुंज बनाई॥ तैसियै सरद निसा सुख सीतल पहुफूल रँग बरखैं। झलकें मनु हीरा मनि मोती सबकौ मन आकरखैं॥ दुग्धफेन सम सयन रचो रुचि चतुर सखी हितकारी। राखी विविध सौंज भरि भाजन जियकी जाननिहारी। ता पर क्रीड़त रसिक रसिकनी रूपहंस के छौनें। कनक कलश कुच कच पिय परसत सरसत रस दृग दौनें॥ ज्यों ज्यों सींचत अधर सुधा रस बाढ़त पिय रुचि बेली।

मदन मनोज फूल फल लागत अद्भुत नव रस केली ॥ अंगनि कांति कुँवरि रसअम्बुधि छवि की उठत झकोलैं। प्रीतम चाह के भँवर परत अति नैन मीन से डोलैं ॥ प्रिया चरन लै लै दृग लावत कबहुंक लै उर लावैं। कबहुंक जघन निचोल गहैं कर श्री सुंदर मुसक्यावैं ॥ मोचत नीबी बन्ध कंचुकी बाढ्यो मैन जमाला। नेति नेति हठ मुंच कहत मुख कोप कपट करि बाला ॥ आतुर अति अनुराग भयौ पिय गहि गहि चरन मनावै। त्यों त्यों कुवरि कपट हठ ठानत सीस पगनि तर नावै ॥ देखि दीन आतुर पिय सुंदरि अंचल लै मुसिक्यानी। उमड़ि ढरो रसप्यावत अतिशय हियो खोलि लपटानी ॥ भूषन अङ्ग लगे सब दूषन अम्बर लाज उतारे। अङ्ग के अङ्ग भए सब भूषन नेह बसन तन धारे ॥ रति विपरित विलसत रसलम्पट सुरत समुद्र बढ़ायौ। पैरत फिरत मीन से मानौं सुख वारिद बरखायो ॥ अमित भए अँग अङ्ग शिथिल अति श्रम जलकनि मुख छाईं। दियें सीस पिय अंस विसद विधि अँखिया घूमि घुमाईं ॥ अंजन अधरन पीक कपोलन विगलित मोहन माला। कंचुकि दरकि तनी सब टूटी छूटे केस रसाला ॥ दलमले अङ्ग सुरङ्ग बसन तन मरगजे अति हीं सोहैं। नैन चकित मुक्ता मुख थिरकत स्वास कछुक सरसौहैं ॥ छिन छिन पीवत रूप रसासव ललितादिक निजु सङ्गी। तिनके चरन कमल कोमल अति अलबेली अलि भृङ्गी ॥ २५६ ॥

नीकी बनी कछु आजु की रैन। कालिन्दी तट कुञ्ज मञ्जु में रची सजी सुख सैन ॥ राका सरद निसा सुख

सीतल मन्द सुगन्ध समीर। फूले कुसुम सुदेस विविध विधि कूजत कोकिल कीर ॥ नवल किशोर किशोरी कामिनि सुभग अंग सुकुँवारि। क्रीड़त मिथुन सुरति रति राते मथित कोटि रति मार ॥ भूषन अङ्ग लगे सब दूषन प्रेम समुद्र झकोर। उमड़ि चल्यो रस रंग अंग अँग मेड़ लाज की तोर ॥ दसन वसन जोरे रसनागर लागि रहे बिबि नैन। रसिक लाल लोभी रस लम्पट तऊ न पावत चैन ॥ ऐंचत जघन दुकूल मूल भुज मोचत नीवी बन्ध। नेति नेति कल बोल कुँवरि कहि परे प्रेम के सिन्धु ॥ मृदुल चिबुक गहि २ परबोधत कोटि कपट कर पेलि। टूटत तरकि तनी कुच सम्पुट सरसत उरसि सुकेलि ॥ उमड़ि ढरी रसनागरि आगर देत सुधाधर पान। सींचत रस मनों मैन को बिरवा पोषत प्रीतम प्रान ॥ उरझि रहे तन मन अँग अँग बिब गौर स्याम सुकुवार। तिरत फिरत मनु मीन के छौंना रूपसमुद्र अपार ॥ बिलुलित सिथिल गलित लट मुख पर झलकत श्रम कन बारि। छाइ रहे मनों ओस के कनिका कनक कमल दल चारि ॥ सरवस रस अद्भुत रस आगर निविड़ निकुंज विहार। अलबेली अलि नैन चसकि करि पीवत सो रस सार ॥ २५७ ॥

रँग भरे करत कुँवर दोऊ बतियां। नायक निपुण रसिक चूड़ामनि बीच बीच परसत बर छतियां ॥ ढांपति नील निचोल लड़ैती सरसत विविध प्रेम की गतियां। अलबेली अलि नैन सिरावति निरखि २ नव नेह की घतियां ॥२५८॥

करत रँगीले लाल दोऊ मिलि हँसि हँसि रंगभरि ब-

नियां । बाढ़त सुख मुख बोल लोल दृग प्रेम मुदित अंग २ पुलकनियां ॥ कोक कला गुन रूप विचित्रित उमगि उमगि रति लागत छनियां । अलबेली अलि आनँद बेली बढ़ी रहत अतिहीं सब रतियां ॥ २५९ ॥

नीकोब लागत रैन दिवारी । दीपत दोति उदोति चहुं-दिसि रचना रुचिर सँवारी ॥ खेल को चाह बढ्यो दोउ मनमें जब हँसि सोलहीं डारो । बदि बदि दाइ धरत दोऊ मिलि रस के रसिक खिलारो ॥ झलक रही आभा अंगनि की छवि रही झीनी सारी । लटकि रहे लटकन पहुँचनि के सोभा बढ़ी अपारी ॥ देखत कहुं खेलत कहुं प्रीतम खेल की सुरति बिसारी । जोइ जोइ धरत जितति सोइ भामिमि सुन्दरि रूप उँज्यारी ॥ रस खेलन खेलत रसहीं दिन रसिक अवधि पिय प्यारो । अनबेली अलि बलि बलि छवि पर करत प्रान बलिहारी ॥ २६० ॥

आजु सखी सुभ रैन दिवारी । खेलत जुआ रँग भरे दोउ प्रेम मगन पिय प्यारी ॥ उरझि रहे नैननि सों नैना कौन जीत को हारी । मानो मैन खेल खेलत अति मोहन रूपउँज्यारी ॥ तैसिये रंग भरी सँग सजनी जिय की जाननिहारी । खेल खिलावैं दाव बतावैं सुख उपजावें भारी ॥ धरत दाइ चित चाइ चोप पिय जीति लेत सुकुँवारी । लावत दुनो दाव सोउ हारत अँखियन रूप खुमारी ॥ लगत चोप मन मोहन जबहीं पहुंची धरत उतारी । जोइ जोइ दाइ धरत सोइ हारत फरत न जीत बिहारी ॥ भूषन अङ्गन के सब हारे अरु मुरली लै हारी । किलक किलक

मुख हँसत भामिनो सुन्दरि रूप उँज्यारी ॥ रहे कहा सिर नाय स्याम तुम कहत सखी हितकारी । हारि रहे दिन प्रान जहां तुम अब कह सोच बिचारी ॥ लाज भरे द्दग चूमि लड़ेती भरि लीने अँकवारी । अलबेली अलि अविचल जोरी रसिकनि जीव जिवारी ॥ २६१ ॥

रैन दिवारी कुंज महल में खेलत जूआ रसिक रसीले। रँग भरों खेल खिलावैं सजनी दाव धरत दोउ रंग रँगीले ॥ अरस परस भ्रूगरत बिच बिच बिब छके नैन छबि छैल छबीले । अलबेली अलि करत केलि कल नैन बैन मद मदन रमीले ॥ २६२ ॥

राग सोरठ ॥

रँग भयो लालन नवल किशोरी । प्रगटी मनो प्रेम की मूरति भूतल पर यह जोरी ॥ करत केलि रस रंग महल में प्रेम अनङ्ग झकोरी । अलबेली अलि सरस सुधारस बरपत हैं निसि भोरी ॥ २६३ ॥

देखो माई सुभग जोरी वनी । कनक दुति इक अंग सुन्दर एक मरकत मनी ॥ इक सुसील सुभाय एकैं नेहरस सों सनी । प्रगटि मनु अनुराग मूरति जाति नाहिन भनी ॥ करत नित हित केलि कल मिलि विपिन भूतल घनी । परम भट रस रसिक रति रण मदन मद दमनी ॥ अस सुनी नहिं नैन देखो रूपधन के धनी । अलबेली अलि सुरस संपति रसिक जन उर ठनी ॥ २६४ ॥

देखो माई आजु की यह रैन । फूली ज्योन सु सरद सीतल छायौ बन मानों मैन ॥ हँसजा तट कुंज मालति रची-

रुचिर सुख सैन। करत अद्भुत केलि कल मिलि पिय प्यारी सुख दैन ॥ खण्डि खण्डि करि खात बीरी रहसि रहसि मुख लैन। हँसि हँसि जात समात दम्पति पुलकि पुलकि उर ऐन ॥ मथित मदन मन मोद बरखत सरस हित चित चैन। तृषित चकोर रहे लगि रंध्रनि अलबेली अलि नैन ॥

स्यामा प्यारी प्रीतम के उर लगो। मानो रूप की माल मनोहर अद्भुत छबि जगमगी ॥ हरिकन चारु हार कुच ऊपर छुटी लट सगबगी। अलबेली अलि नैन बसो नव कुँवरि रूप रगमगी ॥ २६६ ॥

स्यामा प्यारी प्रीतम के उर बसी। तरु तमाल मनु कुन्दन बेली अङ्ग अङ्ग छबि लसी ॥ गौर स्याम भुज चारु मनोहर पुलकि पुलकि गहि गसी। झीने पट झलकत मुख सुन्दर मनु घन माँझ ससी ॥ भूषन बसन सिथिल अँग अँग सब मैन ललक नहिं खसी। अलबेली अलि प्रेम पङ्क में अँखियाँ मीन फसी ॥ २६७ ॥

आजु महल अति राच्यो रङ्ग। परी भीर नव नैन कटाछन झूमत अङ्ग अनङ्ग ॥ सुभग सेज रँगभूमि मनोहर जूझत दोउ रण सूर। पुलकि पुलकि उर लागत दम्पति हारत नाहिन मूर ॥ नूपुर रव कल किंकिनि बाजत मनु दुंदुभि सत मार। प्रेम के घाइ लगत अँग अङ्गनि झलकत अति छबि चार ॥ नेति बोल दृग लोल कुँवरि की कछु कछु मुख मुसिक्यान। अलबेली अलि राखत मानों फिर फिर सखन सान ॥ २६८ ॥ राग कान्हरौ ॥

आजु सखी नव कुंज महल में बिहरत अति अनुराग

भरेरी। छके छैल दोउ पिये रसासव अद्भुत प्रेम प्रवाह परेरी॥ परीं भुजा गर चारु हार सी तन मन एक होइ लपटाने। मानों लूटत रासरूप की ललित लाल लोचन ललचाने॥ चुम्बन नवल कपोल पुलकि पिय गौर स्याम दुति लगत सुहाई। मनों पिवत मकरँद अलि बैठ्यो अरुन नलिनि अद्भुत छबि पाई॥ कछुक अमकनी जुत कल राजत सोभित सुन्दर मुख मुस्क्यायें। अलबेली मनु परी ओस अति प्रातहिँ रूपकमल बिगसायें॥ २६९॥

आजु निकुंज कुंज में सजनी खेलत रतिरस रास उरन में। राजत हिय मंडल मिलि दोऊ जोरे मंडलि भुजनि जुरन में॥ सुन्दर बदन चन्द उँजियारी घुरत अनँग अँग अङ्ग घुरन में। बाजत अद्भुत गति भूषन की नूपुर किंकिनि बलय सुरन में॥ नृत्तत भृकुटि लोल लोचन अति भाइ भेद अँग अङ्ग मुरन में। अलबेलीअलि नैन छके छबि दम्पति रतिरस रङ्ग भरन में॥ २७०॥

ये दोउ झूलत सुरत हिँडोरें। सुभग जंघ दोउ खंभ मनोहर डाँडि चारु अद्भुत भुज जोरें॥ अधर बिम्ब वर नौतन मुरवा बिबिध रङ्ग मनो प्रेम की डोरें। पटरी सेज चढ़े रस नागर नव नव रङ्ग तरङ्ग झकोरें॥ मधुरी तान गान सुर सूचत किंकिनि नूपुर रव थोरें थोरें। अलबेली अलि रूप रसासव पीवत भरि भरि नैन कचोरें॥ २७१॥

निसिथि भोग लावत दोउ नीके। बिंजन धरे सेज ढिग सजनी हँसि हँसि पावत जीवन जी के॥ मर्गजे बसन सिथिल अँग अङ्गनि खिस रहे भूषन बंधन ही के। अल-

बेलीअलि पियें रसासव घुरी नींद नैननि प्यारि पी के ॥२७२

रूपसुधा भोजन जिनकौ री। ते क्यों और नैन भरि देखें दरस अहार परौ तिनकौ री ॥ नेही नेह बिना नहिं जानत चातक स्वाति बिना कनकौ री। अलबेलीअलि र-सिकन जीवन नैननि नैन मिलन इनकौ री ॥ २७३ ॥

निसिदिन भोग भोजन दिन जिनके। आठौ जाम काम मद माते प्रेम पेच परे भुजन दृगन के ॥ सुरत सौंज दिन रहत निकटही छके छैल मद मत्त मदन के। दसन बसन मुसिकन बर बीरी लूटत सुख उर सेज सदन के॥ प्रेम मुदित मुख बदत बैन कल किंकिनि नूपुर राव बलन के। अलबेलीअलि केलि कलोलनि परे मीन मन नैन अलिन के ॥ २७४ ॥

भोजन निसिदिन सु सुरत अमी कौ। आलिङ्गन अँग अङ्ग निकाई प्रेम पुलक रस लौनो नीकौ॥ चरपर्यो चुम्बन चारु कपोलन खाव्यो नैन नटनि छत ती कौ। तीख्यो कोप सुलभौंह रुखाई खाव्यो चटकनि झटकनि पी कौ॥ पानप पानि पान मुसिकन के उरसि सेज सौंध्यो सुखही कौ। षट रस रहसि रास दम्पति अति अलबेलीअलि जीवन जी कौ ॥ २७५ ॥

निसिदिन भोग भोजन रुचिकारी। रूप अनूप विविध वर विंजन अँग अँग सुन्दर निर्मित थारी ॥ आलिङ्गन चुम्बन मधु मेवा मुसकनि मुख मिश्री लै डारी। मादिक मधुर सुधाधर पूरत चाहि सु चोंप सुगंध सुधारी॥ पानप पानि प्यार रस दम्पति सौंध्यो नेह सुवासन भारी। भरि

भरि पीवैं नैन चखक कल नवल लाल नव रूप उँज्यारी ॥ मोद बिनोद पान की बीरी खात खवावत प्रीतम प्यारी। उरसि सेज राजत रँग भीने अलबेलीअलि लखि बलिहारी॥

राग परज।

आजु सखी सुख बरषत कुंज। बिहरत रसिक नागरी नागर उपजत मनमथ पुंज॥ सुभग सेज अंसनि भुज दीने करत हास परिहास। पुलकित तन परिरंभन चुम्बन बिलसत विविध बिलास॥ परसत पिय नीबी नव उरुजन चुम्बत नैन कपोल। प्रिया कपट हठि करन दुरावत नेति नेति मृदु बोल॥ आतुर बिबस मथित मन मनमथ धाइ धरति भरि अंक। अद्भुत रतिरस पीवत प्यावत सब बिधि होइ निसंक॥ अँग अँग अमित सकल जब जाने मुख पर श्रम कन वारि। अलबेलीअलि ललितादिक हँसि अंचल करत बयारि॥ २७७॥

आजु समात न तन पिय प्यारी राजत प्रेम प्रजंक। दुहुँ भुज बीच बसत कल कामिनि गह्यो मनु राहु मयंक॥ मुसकनि बदन मदन मद पूरत ललित बिलोकनि बंक। रीझि रीझि पिय पुलकि पुलकि तन धाइ धरत भरि अंक॥ अरुझी चारु हार बर माला कुण्डल कल ताटंक। अलबेली अतिसय रस पीवत बीती रैन निसंक॥ २७८॥

राग जैजैवन्ती।

नवल रँगीली सेज रँगीले करत रँगीली केलि। मन्द मन्द मुसकात जात पिय प्रिय ग्रीवा भुज मेलि॥ चुम्बत नवल कपोल पुलकि पिय भरि भुज अंक सकेलि। अलबेली

अलि करन दुरावत हँसि कर सों कर पेलि ॥ २७९ ॥

आजु सखी नव लाल रँगीले सुभग सेज पर राजैं। झलकि रही आभा अँग अँग की निरखि मदन ससि लाजैं॥ कोककला गुन रूप विचित्रऽति कोटि मैन दल राजैं। अलबेलीअलि रूप मीन से तिरत फिरत छबि छाजैं॥ २८० ॥

नवल रँगीले लाल दोऊ जन सुभग सेज सुख साने। मादिक मैन महा मद माते दम्पति रूप लुभाने॥ अरुझि रहीं भुज सों भुज सुन्दर तन मन रस सरसाने। अलबेली अलि नैन बैन मन अरुझनि में अरुझाने॥ २८१ ॥

नवल निकुंज कुंज में दोऊ करत केलि रँगभीने। अति अनुराग भरे बिव सुन्दर मृदु भुज अंसन दीने॥ करत हास परिहास मनोहर भींजे मेह नवीने। अलबेलीअलि परे प्रेम बस दम्पति रति रस लीने॥ २८२ ॥

सुभग सेज नव नागरि नागर रस की करत कलोलैं। परीं भुजा गर चारु हार सी चपल चारु दृग लोलैं॥ पाननि रङ्ग भरे मुख सुन्दर छबि की उठत झकोलैं। चितै चितै रस बिबस होत अति सुख में अलि बलि बोलैं॥ मोचत नीवीबन्ध कंचुकी पिय उर बर टकटोलैं। नेति नेति कर पेलि करनि कल कुँवरि ग्रीव कल ढोलैं॥ रीझि रीझि पिय अङ्क भरत अति चुम्बन मैन कपोलैं। प्रनय कोप करि कुँवरि लड़ैती ढांपति अंचल ओलैं॥ छूटी लट पट खुले अङ्ग लखि बिके लाल बिनमोलैं। अलबेलीअलि बढ्यो रसाम्बुधि नैन मीन से डोलैं॥ २८३ ॥

अलक लड़ी सुवार लिकुँड़ैती पिय सँग सुख बरषावैं।

उमड़ि ढरे मनु सुघन रूप के दम्पति रीझि रिझावैं ॥ अरुझि रहे अँग अँग तन मन बिब मन्द मन्द मुसकावैं ।
मनौ परी है गांठ नेह की चितै चितै रहि जावैं ॥ जिहि अँग छुअत ललन अति आतुर प्रिय हँसि बदन दुरावैं ।
तिरत फिरत मानौ रससागर रूप मीन कुल कावैं ॥ उत आतुर इत नेति नेति कल प्रेम समूह बढ़ावैं । अलबेली अलि हटकनि झटकनि लखि लखि नैन सिरावैं ॥ २८४ ॥

देखि सखी नव लाल रँगीले करत केलि रँगराते ।
झूमि रहे अँग अङ्ग मनोहर महा मदन मद माते ॥ चुम्बत नवल कपोल पुलकि पिय सोभित मुख मुसकाते ।
मनों पिवत मकरन्द जलज पर लोचन अलि ललचाते ॥
खुलि रहे बार चारु उर अंचल अँग अँग रूप चुचाते ।
अलबेलीअलि निरखि निरखि सुख नाहिन नैन अघाते ॥

नीकें नेक निहार सखी लगि अरुझि रहे दोऊ जन ।
भुज सों भुज ग्रीवा सों ग्रीवा अरुझे हैं मन सों मन ॥ अरुझि रहीं उर माल मनोहर कुंडल कल ताटंकन । अलबेलीअलि चारु चित्र से चितै रहैं लोचन गन ॥ २८६ ॥

सुभग सेज पर राजत गोरी पिय मुख सों मुख लायें ।
मानों नीलअचल पर पूरन बैठ्यो ससि रस न्हायें ॥ सुन्दर रूप कुमुद से बिगसत सोभित मुख मुसकायें । अलबेली अलि नैन सखिन के रहे चकोर से चायें ॥ २८७ ॥

झूमि रहे दोउ रस के लोभी नवल नेह सुख दैना ।
छकनि छके दंपति रस लंपट कई मैन की सैना ॥ लागि रहे उर सों उर सुन्दर जुरे नैन सों नैना । मानों लूटत

रास रूप की करत ललन सुख चैना ॥ हँसि हँसि कसत सु दृढ़ भुज मूलनि बलित ललित कल बेना । अलबेलीअलि जानत नाहिन कितै द्योस कित रैना ॥ २८८ ॥

अरस परस रस भरे सुरत रँग अरुझि रहे अँग अँग दोऊ जन । अरुझि रहीं पहुँची कल कुंडल दामिनि द्योत दिपत स्यामल घन ॥ अरुझी हैं बनमाल हार हिय हँसि हँसि जात अरुझि तन में तन । अलबेलीअलि लगीं झरोखन अरुझि रहे तहँ नैन सखीगन ॥ २८९ ॥

राग सोरठ।

देखि सखी इनको नव नेह । उमड़ि ढरे घन रूप के मानों बरषत रस कौ मेह ॥ खान पान बसनन कल भूषन भूले सब सुधि देह । अलबेली नहिं जानत निसि दिन परे प्रेम के गेह ॥ २९० ॥

देखि सखी अँग अँग की कांति । पिय के अङ्क निसङ्क रही लगि दामिनि दुति झलकांति ॥ चित्र से चाह चितै रहे लोचन सुन्दर मुख मुसिक्यांति। थकी महामद छकि अंबुज पर मनु अलिगन की पांति ॥ मधुर मधुर भूषन धुनि उपजत सुनि मनसिज उकलांति । अलबेली मनु मैन विजय हित दुन्दुभि धुनि सरसांति ॥ २९१ ॥

आजु मिलि बिहरत दोउ सुकुँवार । उमड़ि पर्यो नव नेह दुहुन को बरषत अति रस सार ॥ करत पान रस बिकल भयो पिय सुन्दर बदन निहार । रहीं मुख सों मुख लाय लड़ैती पिय उर पर कर धार ॥ सींचत प्रीतम प्रान चितै हँसि अधरसुधा दै चार । अलबेलीअलि मैन मनोरथ

बाढ़ी बेलि अपार ॥ २९२ ॥

नीकें दुहूँ दिसि देखि सखी । मनो रूप की रास मनोहर पिय हिय मांहिं रखी ॥ उमग्यो प्रेमसुधारस सागर नेम की मेड़ नखी । अलबेलीअलि वारत तन मन यह छबि नैन लखी ॥ २९३ ॥

ये दोउ रहत मदन मद माते । अद्भुत रूप सुधाधर पीवत नाहिन नैन अघाते ॥ पीक कपोल पुलक बिब रंजित घूमत दृग रँगराते । अलबेलीअलि चितै रहत हँसि सुन्दर मुख मुसक्याते ॥ २९४ ॥

कुङ्कमचन्द रँग बरषत आज । उमड़ि ढरे छबि के घन मानौं अँग अँग मनसिज साज ॥ मधुर मधुर भूषन धुनि उपजत मनु रूचत कल गाज । अलबेली अलि केलि कलाघन जीते प्रात रतिराज ॥ २९५ ॥

आजु कुँवरि नव रङ्ग भरी । अतिशै मधुर सुधारस सींचत पिय उर माल करी ॥ रहि मुख सौं मुख लाइ चाइ चित हँसि भुज अंस धरी । अलबेली गर दोऊन के मनु प्रेम कि पास परी ॥ २९६ ॥

आजु सखी इनकी दिसि देखि । सुभग सेज राजत अति सुन्दर श्यामा श्याम सुभेषि ॥ पिय पहिरी सारी लै तिय की तिय सिर पाग बिसेषि । गौर भाल पर खौर बिराजत सांवरे अञ्जन रेखि ॥ इतऽति चाह उत नैति नेति कल हँसि हँसि लगत उरेषि । अलबेली अलि यह कौतिक लखि परत न नैन निमेषि ॥ २९७ ॥

क्रीड़त स्यामा स्याम किशोर । नवल निकुँज सुखसेज

मनोहर बँधे प्रेम की डोर ॥ परिरम्भन चुम्बन तन पुलकित रतिरस सरस झकोर । ललित बिलोचन चारु चितै हँसि लेत ललन चित चोर ॥ करत केलि कौतिक मिलि दोऊ मेंड़ि लाज को तोर । अलबेली अलि निरषि सखी जन तन मन देत अकोर ॥ २९८ ॥

मोहन अति रस की मुसक्यान । चितवत चन्दबदन सुन्दरि को अति आतुर पिय प्रान ॥ कबहुँक उर वर पिय टकटोलत रहत कुँवरि दृग तान । कबहुँक अङ्क भरत अलबेली हँसि लागत उर आन ॥ २९९ ॥

राग परज ।

देखो देखो हो आजु की रैन । छिटक रही निसि ज्योन उँज्यारी छाइ रह्यो मनों मैन ॥ कालिन्दी तट कुञ्ज मनोहर रचो सेज अति चार । क्रीड़त रसिक रसिकनी दोऊ अङ्ग अङ्ग सुकुँवार ॥ लसत रँगीलो भांति भामिनी पिय उर हार रसाल । लपटि रही मनु कञ्चन बेली सुंदर स्याम तमाल ॥ अति आतुर आसक्ति भयो पिय ऐंचत उर बर वास । झटकि करनि कर नैन नटनि कृत प्रनय कोप कल हास ॥ पीवत अधर सुधा मद पूरित छके रहें निसि भोर । अलबेली अलि निरषि प्रान धन वारत है तृन तोर ॥ ३०० ॥

राजत सेज सहानी दोऊ पहिरि सहाने बागे । दुलहिनि नवल किशोरी गोरी दूलह स्याम सुभागे ॥ जुरी गांठि उर अञ्चल चञ्चल नैन रूपरस पागे । सकुच कुवरि अँग अँग दुरवत मनु प्रथम मिलन अनुरागे ॥ पिय सिर

सेहरा चाहिचौंप कौ रूप मौर रस रागे। पिय प्यारी मिलि परत प्यारि को भांवरि अंग अंग लागे ॥ नुपुर कलकिंकिनि मंगल धुनि समर सैन सजि जागे। अलबेली लषि वारत तन मन दम्पति नखक्षत दागे ॥ ३०१ ॥

मेरे लाल लडैती दोऊ राजत नवल निकुंज। करत केलि कौतिक मिलि दंपति उपजत मनसिजि पुंज ॥ मंद मंद मुसिक्यात जात विव पान भरे मुख मंजु। अलबेली अलि प्रेम रसोदधि विगसत सोभा कंज ॥ ३०२ ॥

नवल नेह की रासि रंगीले भरे नेह के रंग। गौर स्याम सोभा सुषसागर लागि रहे अँग अंग ॥ अद्भुत गति उपजति है मन की विलसत प्रेम अनंग। अलबेली बाढौ सुखसागर छवि की उठत तरंग ॥ ३०३ ॥

ए दोउ महा मदनमद छाके। झूमि रहे अति रस के लोभी अधर अधर लगि थाके ॥ मुख सौं मुख मिलाइ दोऊ जन उर उर रहे मिलि जाके। जगमग रहे मुख चँद अलबेली नील जलधि पट ढांके ॥ ३०४ ॥

राजत आजु दोऊ सुखधाम। सुभग सेज पर गौरस्याम मिलि सोभित अति अभिराम ॥ नवल कपोलन पर प्यारी के धरें अधर पिय स्याम। मानौं कनक कमल मधु पीवत छक्यौ थक्यौ अलि गाम ॥ चितै चूंव उर लावत सुंदर सींचत तरुकल काम। अलबेली अलि वेलिमनोरथ बढ़ी रहत सब जाम ॥ ३०५ ॥

देखि सखी इनि की ललिचान। मानो लूटत रास रूपरस करत सुधाधर पान ॥ कबहुंक जघन निचोल कंचुकी अँ-

चत हँसि रस सान। लोलुप लोभि लाल रस संपट धाइ धरत उर आन॥ नेति बोल अति लोल ग्रीव करि कुंवरि रच-ति दृग तान। धरत सान कर कोप प्रनय कल मानो मन-सिजि बान॥ अतिरस मत्त मुदित रति बितरति मंद मंद मुसिक्यान। अलबेली अलि परे प्रेमबस दंपति छ्वर सु-जान॥ ३०६॥

कुंज महल सखि बरषत रंग। गौर स्याम सोभा सुख सागर लागि रहे अँग अंग॥ चुंबत नवल कपोल पुलिक पि-य भींजो प्रेम अनंग। मनों रूप की रासि समेटत भरि भरि लेत उछङ्ग॥ नयन मटन कृत नेति नेति मुष छबि की उठित तरंग। पान भरे लगि रहे मुष सौं मुष फूले कँवल सुरङ्ग॥ छूटी लट टूटी उर माला बिथिरी मोतिन मंग। अलबेली अलि बिथकित घूमत नैननि नेह अभंग॥ ३०७॥

सुभग सेज रँग भीने दोऊ अंग न अंग समात। मनो कंचन में जटित नील मनि बिबि बिधि दुति झलकात॥ ऐंचत पिय पट हँसि कटि डोरी अति आतुर कुम्हिलात। निरषि निरषि ललिचानि ललन की सुंदर मुख मुसिक्यात॥ हँसत लसत बिबि बदन कँवल से चितै चितै रचिजात। अ-लबेली पलि पलक न लागी बीत गई सब रात॥ ३०८॥

आजु सखी सुख सेज पै भामिनि गहि रह्यौ पिय सुख कंद। मानो गहि रह्यौ राहि आहि करि पूर्न रूप को चंद॥ पीवत अधर सुधामधु प्रीतम बाढ़त छबि के वृंद। मानौं कनक कंवल परि बैठ्यौ पीवत अलि मकरंद॥ उरझ रहे अँग अँग बिव सुंदर झूमित मनों गयंद। अलबेली अ-

लि सब निस बीती परे प्रेम के फंद ॥ ३०९ ॥

राजत नवल निकुंज में दोऊ किये रसासव पान। रही रैन अवसेष पाछिली भरे अँग अँग अरिसान ॥ करत सैन पिय मुष सौं मुष लगि कछु अमकनि झलकान। मानों नीलशयन परि बैठ्यो ससि रस करि अस्नान ॥ बिथिरी अलक झलक जुग गंडनि लसत पीक रंग पान। मानौ करत कलोल मधुपगन कनक कँवल पर आन ॥ दै अंसनि भुज बदन बिलोकत सुन्दर स्याम सुजान ॥ अलबेली अलि रासि रूप की राखो प्रान समान ॥ ३१० ॥

वृंदावन बस यह सुख लीजै। सात समै की टहल महल बिनु इक छिन जानि न दीजै ॥ परम प्रेम की रासि रसिक जे तिन हीं कौ सँग कीजै। निवडि निकुंज बिहार चारु अति सुरस सुधा दिन पीजै ॥ और भजन साधन में मिथ्या कबहूं काल न छीजै। दिन दुलराई लड़ाइ दुहुन कौं अलबेली अलि जीजै ॥ ३११ ॥

लीनों वृन्दावन बस लाह्यौ। सेवा टहल महल की निस दिन जिन यह नेम निबाह्यौ ॥ अद्भुत प्रेम बिहार चारु रस रसिकनि बिनु किनु चाह्यौ। अलबेली अलि सफल कियौ सब जिन यह रस अवगाह्यौ ॥ ३१२ ॥

ऐसैं काल बितावौ निस दिन। भोर सांझ लगि सांझ भोर लौं लाडि लडाई दोऊ जन ॥ छिन विछेप न होइ टहल तैं कीजै यह अद्भुत पन। सब रस को रस सार बिहार सु बीनौं हंस रसिकगन ॥ बिबिधि भांति के और भजन जे लौंन बिना ज्यौं बिंजन। श्री राधा पद कमल कृपा बिनु

को पावै रस को कन ॥ श्री वृन्दावन बास रासि रस समय प्रबंध परम धन। अलबेली श्री बंसीअलि बलि यह मानों मेरें मन ॥ २१३ ॥

इति श्री समय प्रबन्ध पदावली सम्पूर्णम्।

सम्बत् १९५५ ॥

श्रीविहारिणौ जयतः ।

अथ गुरु परम्परा ।

अस्ति वृन्दावनं नाम वनं प्रेमरसात्मकं ।
यत्र नित्यं विहरत एकात्मानौ प्रियाप्रियौ ॥ १ ॥
कुंजकुंजगता क्रीड़ा कदाचिद्विरमेन्नहि ।
यत्रमायाप्रपंचस्य नवार्त्ताश्रुतिगोचरा ॥ २ ॥
अनाद्यविद्यामुग्धानां जीवानांदुःखसन्ततिः ।
नवेदिता कृपाशक्त्या भक्त्युद्धारोपि दर्शितः ॥ ३ ॥
तत आसीन्महानादः प्रणवात्मामहामनुः ।
यो राधाचरणांभोज नूपुरध्वनिरुच्यते ॥ ४ ॥
ततआसीन्महत्तत्वं महानारायणस्ततः ।
तस्माज्ज्योतिरभूल्लिंगं महादेवेतियंविदुः ॥ ५ ॥
त्रिपुरारिस्ततोजातस्ततःश्रीणनिधिःस्मृतः ।
ततोज्ञाननिधिःश्याम निधिरात्मनिधिस्ततः ॥ ६ ॥
तस्यशिष्योपिसहजनिधिर्वरुणशेवधिः ।
वामदेवस्ततःश्रीमान् विष्णुस्वामीमहाशयः॥ ७ ॥
रौहिण्याचार्य्यनामासीत्तस्यशिष्योमहामतिः ।
सेवाचार्य्यस्ततो देवाचार्य्यःपाखंडखंडनः ॥ ८ ॥
श्रीमान्हिरण्यगर्भाख्य आचार्य्योभक्तिसागरः ।
गोविन्दाचार्य्यनामा च मायावादनिरासकृत् ॥ ९ ॥
ततः श्रीगंगलाचार्य्यो लोकाचार्य्यस्तदाश्रितः ।
तस्माच्छ्रीमान्महाप्राज्ञो त्रिलोकाचार्य्यसंज्ञितः ॥ १० ॥

नन्दसारस्ततोदुःख दावप्रशमवारिदः ।
प्रेमाकरस्तस्य शिष्यो मिश्रनारायणाह्वयः ॥ ११ ॥
श्रीशुकाचार्य्यकृपया य आसील्लोकपावनः ।
श्रीभागवतमर्मज्ञो धर्मज्ञः शुद्धभक्तिमान् ॥ १२ ॥
गोस्वामिपदवीयस्य विख्याताभारताजिरे ।
किशोरीरमणोयस्य सेव्यरूपोमहाप्रभुः ॥ १३ ॥
श्रीगोवर्द्धनमिश्रोतः प्रेमभक्तिप्रवर्त्तकः ।
श्रीराधालालनेदक्षो वृषभानुरिवापरः ॥ १४ ॥
श्रीमान्भूपतिरायोतो मायावादतमोपहः ।
ब्रजभूषणमिश्रोतः श्रीमान्नन्दइवापरः ॥ १५ ॥
गोस्वामीश्रीमान् कमलनयनोतोमहाशयः ।
मायावादाविलंभक्ति रसंशोधितवान्हियः ॥ १६ ॥
गोस्वामिप्रवरस्तस्माच्छ्रीप्रद्युम्नःसएवसः ।
दिगन्तकीर्त्तिर्यस्यास्ति भक्तिमार्गप्रवर्त्तिनी ॥ १७ ॥
श्रीमान्वंशीधरस्तस्मात् समत्तंललितावपुः ।
श्रीराधाराधनपरो द्वितीयोवृषभास्करः ॥ १८ ॥
अनन्यधर्मवक्ता च कर्त्तानदनुमोदिता ।
वभूवनापरोनापि भविष्यतिनचास्ति च ॥ १९ ॥
धामवृन्दावनंराधा सेव्याभावःसखीमयः ।
श्रीकृष्णस्तदभेदेन सेव्यइत्यादिभावना ॥ २० ॥
पुरुषार्थःशुद्धसख्यं तत्प्रख्यंसर्वमेवहि ।
यत्प्रसादान्मयाप्राप्तं सावंशालिर्गतिर्मम ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरुपरम्परा समाप्तः ।

अथ श्रीस्तोत्र लिख्यते ।

राधाध्यानपरायणेषु निजिलंतत्कीर्त्तिसज्ज्योत्स्नया
तन्नामानुगतद्विजानिगुपिलं तस्याः कृपाभाजनम् ।
श्रीमच्छ्रीललितासखीप्रतिनिधिम्मच्चित्तकम्बूवरं
श्रीराधागुह्निले वसन्तमनिशं वंशीधरंभावये ॥ १ ॥
उद्यद्भास्करभास्वरा नवपदांभोजेनयासुन्दरं
स्तूचन्भावकचित्तगागसदनं सौन्दर्यसीमापरा ।
श्रीमन्नन्दसुतावतारप्रकृतिः श्रीराधयाधिष्ठता
तांव्यक्तिंपरिचिन्वता मुकुरच्छोस्वयात्मनाभासते ॥ २ ॥
श्रीमन्मन्मनउन्मदीकरमहामोहस्फुरन्माधुरी
मन्दन्मोहनमोहनत्वमनिशं यावैसमुज्जृम्भते ।
मोद्यन् श्रीमद्विमानमंघतमसः पारावतारापरा
तांमांदर्शयवंशिके मधुरतामानापद्यां मानिनीम् ॥ ३ ॥
चंचच्चंचलचारुलोचन चमत्कारेण संसिञ्चती
चित्तंचातकवच्चचिन्तनपरं चन्द्रायते चेत्तदा ।
चेच्चंचुचकोरकोभवति तच्चातुर्यसीमाचया
तांमांदर्शयवंशिकेचरणयोर्यस्यंचरोकोजयोः ॥ ४ ॥
श्रीमन्नन्दितनन्दनन्दननमन्नामावलीभानुजा
न्टत्युन्नूपुरनिष्क्वणैर्नवनवंनित्यंतुरागंनयन् ।
यस्याः सद्मनिपद्ममध्यविलसद्राधाभिवादापरा
सास्यान्मदृदिवंशिका परतराद्वंक्रीडनेयदशा ॥ ५ ॥
पारक्ष्ययोनिखिलभावशरत्सुमाया. तत्साधकेन्द्रवरध्वान्तसमू-
द्ववातिः । वर्यस्वतीसकलसुन्दरताभियुक्ता. मूर्त्तिर्ममप्रविश-
ताद्धदि श्रीलवंश्याः ॥६॥ श्रीराधिकाललितयासहितांप्रसन्नां.

या लालयत्यति सुभासितचारुहासैः। निश्रेयसेसमभवन्नति-
यामराणां, सावंशिकास्फुरतुमे हृदिसुन्दरास्या ॥ ७ ॥
स्वच्छन्दोन्मदहा च भावनिपुणा श्रीराधिकोराधितो
योवैपंचरसप्रदानचतुरोधीराधिकाराधिकाम्।
तस्याः पादसरोरुहैकपरमः सन्मानसेमानसे
नःस्याच्छ्रीवृषभानुजा परिकरोवंशीधर श्रीधरः ॥ ८ ॥
यस्यावतारः किलमादृशानां संसिद्धये सन्मनुशोधनाय।
लब्धंवपुर्येन च राधिकाया देहेपुनर्वातिरुचिप्रकाशे ॥ ९ ॥
सएवनित्यंविपिनान्तरस्थः सर्वान्जनान्सम्मदयन्रसेन।
सर्वानभिष्टान्स्वन्संविभर्ति विभ्राजतेसद्विधुवत्प्रकाशः ॥१० ॥
विषयतापपरिप्लुतरूपमत् प्रथमतोभ्रमतोऽस्मतोनिशम्।
तमिहवीक्ष्यशरन्नवचन्द्रिकं समुदितंमुदितंमुदितंमनः॥ ११ ॥
कमलिनीमलिनीमलिनी कृताभुविनतेविनतेविनतेसमः।
विशमलंशमलंशमलंकरोभव तुमेवतुमेवतुमेदिनीम् ॥ १२ ॥
श्रीमद्गौरांगसेवाप्रकटित पटुतामोदसंवित्प्रकाशः
श्रीराधाभिन्नमूर्त्तिः सतुसकलसुहृत्पूर्णितागंतुकाशः।
श्रीच्छाधिष्टानरूपोममहृदिविलसन्नेत्रकर्पूरपूरः
श्रीमद्राधाभिवादं प्रवदतिसततं मन्महाभाग्यराशिः ॥ १३ ॥
इष्टंमित्रंकलत्रंकुलभजनमनोराधिकायस्यसाक्षा-
त्तंध्यायेश्रीमदाद्यं भवभयमथनं म्लानताधूमकेतुम्।
स्फूर्ज्जद्राधास्वरूपं विकसितवदनं जल्पितानल्पकल्पं
श्रीराधाराध्यशब्दं विलसितकमलाकोटिसंपूज्यमानं ॥ १४ ॥
इति श्रीगोस्वामिकृष्णलालविरचितं श्रीमद्वंशीधरस्तोत्रं।